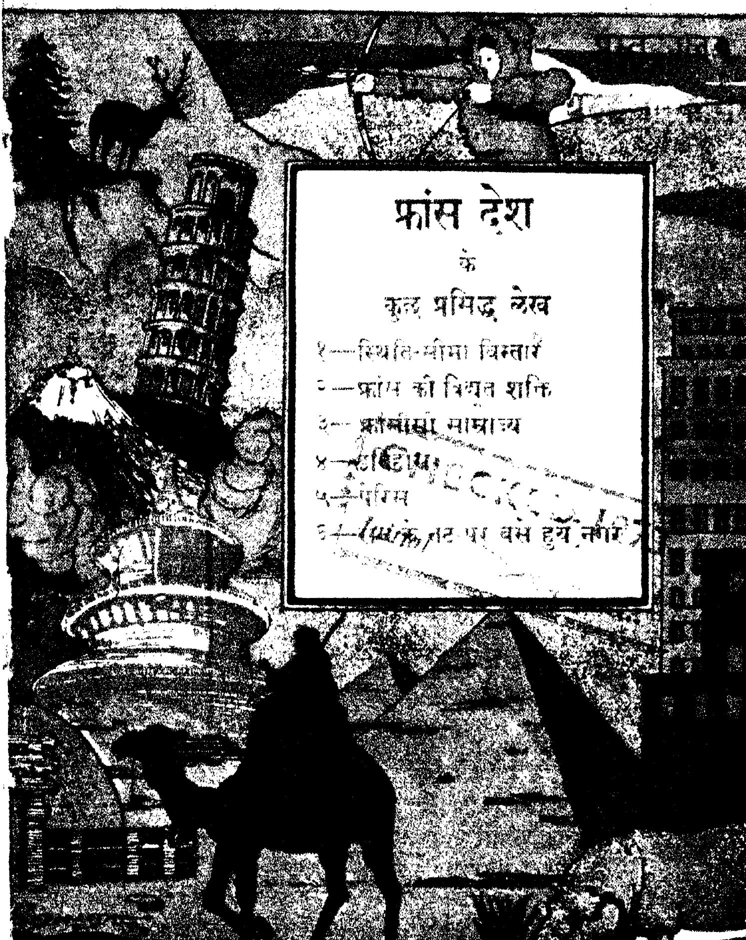
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—२८



फ्रांस देश

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—स्थिति-सीमा विस्तार
२—फ्रांस की विपुल शक्ति
३—फ्रांसीसी साम्राज्य
४—[illegible]
५—पेरिस
६—[illegible] तट पर बसे हुये नगर

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

अक्तूबर १९४२] **देश-दर्शन** [आश्विन १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४]

फ्रांस

संख्या ४
पूर्ण संख्या ३८

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-
Foreign	Rs. 6/-
This copy	As. -/6/-

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

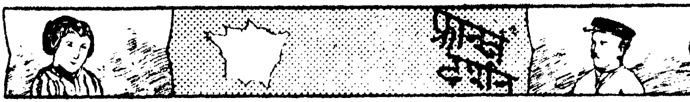
स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

फ्रान्स का देश पश्चिमी योरुप के ऐसे भाग में स्थित है जहां होकर योरुप के प्रधान राजमार्ग जाते हैं। फ्रांस का उत्तरी तट नार्थ (उत्तरी) सागर, इंगलिश चेनल और अटलांटिक महासागर को छूता है। इसलिये फ्रांस का यह मार्ग अमरीका और पश्चिमी योरुप के व्यापार के लिये बड़ा उपयोगी है लेकिन फ्रान्स का दक्षिणी भाग भूमध्यसागर के किनारे है। इसलिये फ्रान्स पुराने समय से ही दक्षिणी पूर्वी योरुप, उत्तरी अफ्रीका और एशिया के व्यापार से लाभ उठा रहा है। स्थल सीमा पर उत्तर की ओर बेल्जियम और जर्मनी फ्रान्स के पड़ोसी हैं। फ्रान्स के पूर्व में स्विज़रलैंड और इटली है दक्षिण की ओर पिरेनीज पर्वत के पार फ्रांस का पड़ोसी स्पेन है। फ्रांस का उत्तरी अक्षांश (५२'२३) ब्रिटेन के दक्षिणी भाग को काटता है लेकिन इसका दक्षिणी अक्षांश (४२'२३) उत्तरी स्पेन में होकर जाता है। इस प्रकार फ्रांस मध्य योरुप से दक्षिणी योरुप तक फैला हुआ है। ४५ उत्तरी अक्षांश गेरोन के मुहाने को काटता

है। इस प्रकार फ्रांस उत्तरी ध्रुव और विषुवत रेखा के बीच में स्थित है।

फ्रांस का क्षेत्रफल हमारे संयुक्त प्रान्त से दुगुना (११२,००० वर्ग मील) है। फ्राँस के अधिकार में जो उपनिवेश हैं उनका क्षेत्रफल ४० लाख वर्ग मील है जो समस्त योरुप के बराबर अथवा भारतवर्ष का दुगुना है। इसका आकार एक विषम वर्ग के समान है। उत्तर से दक्षिण तक फ्रांस की अधिक से अधिक लम्बाई ६०० मील और पूर्व से पश्चिम तक इसकी चौड़ाई कहीं (दक्षिणी भाग में) ४०० मील और कहीं ५७० मील है। इंगलिश चेनल के किनारे किनारे फ्रांसीसी तट ६७० मील लम्बा है। फ्रान्स का अटलांटिक तट ८६१० मील और भूमध्यसागर का फ्रान्सीसी तट ८८० मील है। फ्रान्स का तट इँगलैंड के तट से बहुत दूर नहीं है। कहीं कहीं इँगलैंड के ऊँचे तट पर खड़े होने से फ्रान्स तट दिखाई देता है। फ्रान्स के तट पर जर्मनी ने जो बड़ी तोपें लगाईं उनके गोलों ने इँगलैंड के तट पर बसे हुये नगरों को भारी हानि पहुँचाई। निकट तट स्थान पर इँगलैंड और फ्रान्स के तट के बीच की दूरी लगभग

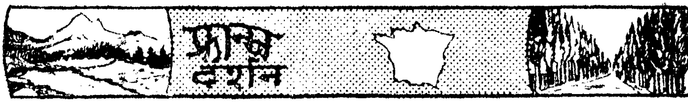


२१ मील है। एक तट से दूसरे तट को स्टीमर प्रायः एक घंटे में पहुंच जाते हैं।

फ्रान्स का उत्तरी समुद्र तट डेन्कर्क से लेकर सोम नदी के मुहाने तक बेल्जियम के तट के समान चपटा है, यह तट रेतीले टीलों से भरा पड़ा है। इसके आगे फ्रांस का तट इँगलैंड के तट के समान है जिससे सिद्ध होता है कि बहुत पुराने समय में इँगलैंड और फ्रांस स्थल द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुये थे। उस समय उनके बीच में समुद्र न था। इँगलैंड के सामने वाले फ्रांसीसी तट पर सफेद खरिया के टीले एकदम सीधे सपाट खड़े हुये हैं। इनके निचले भाग को ज्वार भाटा की प्रबल लहरों ने काट कर खोखला कर दिया है। जब भाटा की लहरें लौट जाती हैं और नीचे ज़मीन निकल आती है तब ऊपर की चट्टानों के टूटे हुये टुकड़े यहां पर बिछे हुये मिलते हैं। फ्रांसीसी लोग इस तट को फेलेसी कहते हैं। यह तट दक्षिण में सेन नदी के मुहाने तक फैला हुआ है। सेन नदी के मुहाने से आगे दक्षिण में फ्रान्स का तट फिर चपटा हो जाता है। इसमें बहुत ही कम ऊँची चट्टानों की पंक्ति सी फैली हुई है। इसे

कल्वेडोस (Calvados) कहते हैं। चेरबोर्ग के पास दानेदार पत्थर आदि पुराने समय की चट्टानें प्रगट हो जाती हैं। पुरानी कड़ी चट्टानों का तट आधे नारमण्डी और प्रायः समस्त ब्रिटेनी में फैला हुआ है। नारमण्डी में चट्टानों की ऊँचाई सब कहीं समान नहीं है। कहीं कहीं समुद्र की लहरें इन चट्टानों के ऊपर होकर बहती हैं। ज्वार की इन लहरों में बड़ा वेग होता है। वे कड़ी चट्टानों को लगातार काटती रहती है। नारमण्डी ब्रिटेनी के बीच में चेनल द्वीप इसी प्रकार कड़ी चट्टानों के कटने से बने हैं। सेण्ट माइकल गांव इसी प्रकार की कड़ी चट्टानों पर बना है। प्रबल ज्वार के समय यह प्रधान स्थल से अलग हो जाता है। जब भाटा की लहरें लौटती हैं तब मनुष्य प्रधान स्थल से पैदल यहां आ सकता है। लेकिन गाड़ियों के पहिये अक्सर भीगी बालू में धँस जाते हैं। ब्रिटेनी में ठोस कड़ी चट्टानों के टीले अधिक ऊँचे हैं लेकिन समुद्र की लहरों ने इन्हें भी काट कर असंख्य प्रायद्वीप बना दिये हैं। यह तट देखने में बड़ा सुन्दर लगता है।

विलेन (Vilaine) के आगे फ्रांस का तट फिर



चपटा हो जाता है और ऊपर से देखने पर कुछ कुछ फ्रीमलैंड (हालैंड) के तट के समान है लेकिन यहां ढीली बालू के नीचे कड़ी चट्टाने हैं। दक्षिणी ब्रिटेनी के फ्रेंच द्वीप इसी प्रकार की कड़ी चट्टानों पर बसे हैं। समुद्र इन कड़ी चटानों के ऊपर बालू बिछाता रहता है लेकिन उनको काटने में असमर्थ रहता है। ल्वायर नदी अपने डेल्टा के सामने कांप की उपजाऊ मिट्टी बिछाती जा रही है। बीच बीच में नमकीन दलदल है।

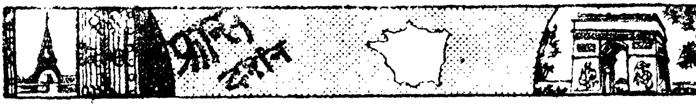
आगे चलकर फ्रांस के तट पर रेतीले टीले हैं। इनकी ऊंचाई सौ या डेढ़ सौ फुट है। यह रेतीली पेटी साढ़े पांच मील चौड़ी है। बालू सूखी और ढीली है इसलिये टीलों का आकार हवा की दिशा और वेग के अनुसार बदलता रहता है। पहले इस ओर बन था लेकिन फ्रान्सीसी लोगों ने इन्हें काट कर जला डाला। इससे तट की बालू हवा के साथ उड़ उड़ कर भीतर की ओर पहुँचने लगी और उपजाऊ भूमि को ऊसर बनाने लगी। इस बालू को रोकने के लिये फ्रान्सीसी लोगों ने फिर ९ मील चौड़ी पेटी में समुद्री देवदारू के पेड़

समुद्र के किनारे किनारे लगा दिये हैं। तूफान के समय फ्रान्स का यह तट जहाजों के लिये बड़ा भयानक हो जाता है।

पिरेनीज़ के समीप फ्रान्स का तट फिर बदल जाता है। यह तट कुछ सीधा और सपाट है। पिरेनीज़ से निकल कर यहां गिरने वाली छोटी छोटी पहाड़ी नदियों ने अपने मुहाने पर कंकड़ बिछा दिये हैं।

फ्रांस के भूमध्यसागर के तट को रोन नदी के डेल्टा ने दो भागों में बांट दिया है। डेल्टा से पूर्व की ओर पहाड़ी टीले कुछ अधिक ऊँचे हैं। इनकी बनस्पति उत्तरी अफ्रीका के समान है। यहीं मेण्टोन, नीस आदि स्थानों में शीतकाल के विकराल जाड़े से बचने के लिये योरुप के धनी लोग धूप लेने जाते हैं।

मार्सेलस (मार्से) बन्दरगाह के ठीक (रोन डेल्टा के) पश्चिम में फ्रान्स का तट अनूप और दलदलों से भरा पड़ा है। कुछ भाग से दलदलों को मार्सेलस नगर के कूड़े से पाट दिया गया है। यहां ड्यूरेन्स नदी के पानी से सिंचाई होने लगी है। पिरेनीज़ पर्वत के समीप



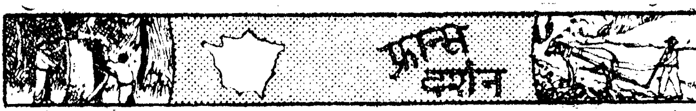
फिर फ्रांसीसी तट कुछ ऊँचा और पहाड़ी हो जाता है। अमरीका का पता लगाने पर फ्रांस का अटलांटिक तट महत्त्वपूर्ण हो गया लेकिन स्वेज़ नहर खुल जाने से फ्रांस के भूमध्य सागर के तट की महत्ता बढ़ गई। उत्तरी अफ्रीका और एशिया के व्यापार का सामान फ्रांस के भूमध्यसागरीय तट पर उतरता है।



भूरचना

फ्रांस का अधिकतर भाग निचला मैदान है। आधे से कुछ कम भाग की उंचाई ६०० फुट से अधिक है भू-रचना के अनुसार फ्रांस निम्न भागों में बाँटा जा सकता है।

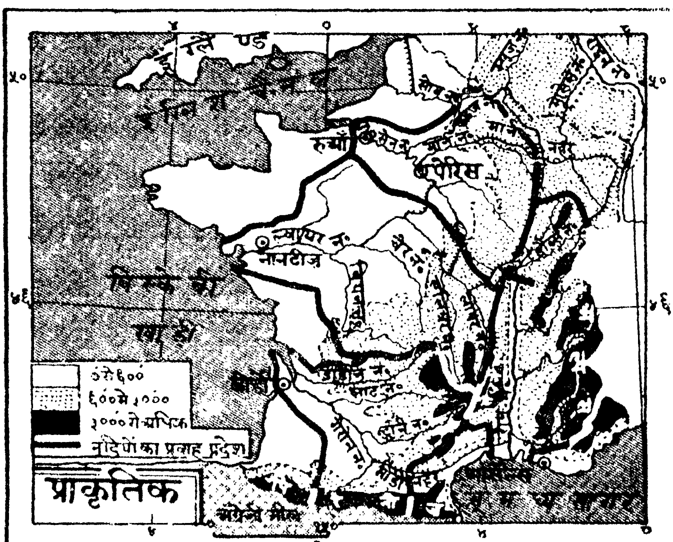
१—अल्प्स पर्वत फ्रान्स के दक्षिण-पूर्व में जेनेवा झील से भूमध्यसागर तक फैले हुए हैं। फ्रान्सीसी अल्प्स में ही योरुप की सर्वोच्च (१५७०० फुट ऊँची) चोटी माउंट ब्लांक स्थित है। यहीं माउंट पेल्वो है जो १३४६२ फुट ऊँचा है। माउंट ब्लांक को छोड़ कर पश्चिमी अल्प्स में विशाल हिमागार बहुत कम हैं। इसी से फ्रांस के इस भाग में हिमागारों से बनने वाली झीलों का अभाव है। माउंट ब्लांक के समीप पश्चिमी अल्प्स का पहाड़ी भाग २५ मील लम्बा और ९ मील चौड़ा है। यह कुछ कुछ चन्द्राकार है। यह दानेदार पत्थर और बिल्लौरी चट्टानों का बना है। पश्चिमी अल्प्स का अधिकतर भाग समुद्र तल से ३००० फुट से अधिक ऊंचा है। बिल्लौरी चट्टानों का प्रदेश उजाड़ है यहाँ की मिट्टी खेती या चरागाह के काम की नहीं है। चूने के पत्थर वाले भाग चरागाहों के लिये प्रसिद्ध हैं। इस



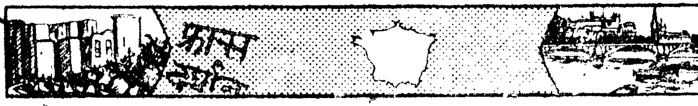
ओर को तेज़ पहाड़ी नदियाँ फ्रान्स को बड़ी मात्रा में सस्ती बिजली प्रदान करती हैं जिससे इस भाग में धातु, केल्शियम कारबाइड, रेशम बुनने आदि के कई कारखाने बन गये हैं। माउंट ब्लांक पश्चिमी अल्प्स का उत्तरी सिरा है। यहीं फ्रांस, स्विजरलैंड और इटली की सीमायें मिलती हैं। इसकी चोटी से स्विस अल्प्स, जूरा, एपीनाइन्स और समुद्री अल्प्स भलीभाँति पहचाने जा सकते हैं। माउंट ब्लांक की चोटी पर चढ़ना कठिन नहीं है। चेमोनी (Chamouni) से चोटी पर जाने और लौट आने में केवल तीन दिन लगते हैं और दस पौंड खर्च होते हैं। चेमोनी की घाटी बड़ी सुन्दर है। यहां शायद ही कहीं समतल भूमि मिलती है। आर्वे (Arve) से सपाट घाटी की ओर भूमि का ढाल ऊंचा हो जाता है। माउंट ब्लांक के हिमागार पूर्व की ओर इस घाटी में उतर आते हैं।

पश्चिमी अल्प्स के प्रधान दर्रे लघुसेन्ट बर्नार्ड (७१७० फुट) के ऊपर होकर जाते हैं। यह दर्रा माउंट ब्लांक के दक्षिण की ओर स्थित है। इस दर्रे के एक ओर डोरा बाल्टिया (Dora Baltea) और दूसरी

ओर ईसेर (Isere) नदी की घाटी है। यहीं होकर सबसे पुरानी रोमन सड़कें जाती थीं। इनके चिन्ह इस समय भी मिलते हैं। माउंट सेनिस (Cenis) दर्रा ६८३५ फुट ऊंचा है। इसके ओर डारा रिपेरिया



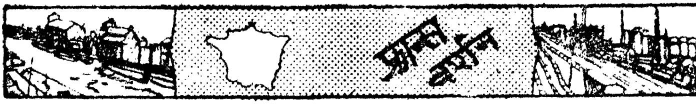
और दूसरी ओर ईसेर की सहायक आर्क नदी है। फ्रांस और इटली के बीच का राज-मार्ग इसी दर्रे में होकर जाता है। इसके बाद माउंट सेनिस सुरंग बनी लेकिन



माउंट सेनिस सुरंग फ्रेजुस दर्रे के नीचे बनाई गई जो यहां से कुछ मील दूर है। माउंट जेनेवर ६०८० फुट ऊंचा है। यह दर्रे इटली की इसी घाटी और फ्रांस की ड्यूरेन्स घाटी के बीच में स्थित हैं और इटली के ट्यूरिन नगर को रोन घाटी से मिलाता है। कोलो डेला मेडोलीना या कोल डी लार्च दर्रा केवल ४३८० फुट ऊंचा है। यह फ्रांस के बार्डोनेची नगर को इटली के मोडेन नगर से मिलाता है। इसी नाम की रेलवे सुरंग ४००६२ फुट (लगभग ८ मील) लम्बी है।

पश्चिमी अल्प्स के उत्तरी सिरे पर रोन नदी की घाटी है। इसके आगे जूरा पर्वत दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व को चला गया है। जूरा पर्वत लगभग १५६ मील लम्बा और ३८ मील चौड़ा है। जूरा की औसत उंचाई केवल २००० फुट है। सब से ऊंची चोटी ५६५४ फुट ऊंची है जिसका दृश्य अल्प्स के समान मनोरम नहीं है लेकिन इनके चरागाह अधिक उपयोगी हैं। जूरा के प्रदेश में कुछ गेहूँ भी उगाया जाता है। कुछ बन भी है। इसका पश्चिमी ढाल फ्रान्स की ओर क्रमशः ढालू होता गया है लेकिन पूर्व की ओर जूरा

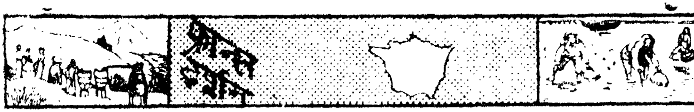
का ढाल एकदम सपाट है। इसी से इस ओर का पानी बड़ी तेजी के साथ बह कर जेनेवा और न्यू चाटेल झीलों में गिर जाता है। जूरा पर्वत के उत्तरी सिरे पर बेलफोर्ट का चौड़ा दर्रा है। यह दर्रा वोजः पर्वत को जूरा से अलग करता है। वोजः की पहाड़ियाँ बहुत नीची हैं। इनकी चोटियाँ घिसते घिसते गोल हो गई हैं। इनके आगे राइन नदी की घाटी है जो वोजः पहाड़ियों को जर्मनी के ब्लैक फारेस्ट (कृष्णावन) नाम की पहाड़ियों से अलग करती है। वोजः और ब्लैक फारेस्ट कई बातों में एक दूसरे के समान हैं। इनकी पहाड़ियां भी एक दूसरे के समानान्तर चली गई हैं। भूगोलवेत्ताओं का अनुमान है कि इस ओर प्राचीन समय में धरती का बहुत मोटा पपड़ा धनुष या वृत्तार्द्ध के आकार में ऊपर ऊंचा उठ गया। फिर वह बीच से टूट गया। बीच वाले धंसे हुए भाग में राइन की घाटी बन गई। इसके एक ओर वोजः और दूसरी ओर ब्लैक फारेस्ट की पहाड़ियां बन गईं जो एक दूसरे के समानान्तर चली गई हैं। वोजः पर्वत लगभग १०० मील लम्बे और अधिक से



अधिक ३० मील चौड़े हैं। इनकी उंचाई प्रायः ३००० फुट है। यह दानेदार और बलुआ पत्थर के बने हैं। इनकी अधिक पुरानी चट्टानों में लोहा, सीसा, नमक और कोयले की खानें हैं। वोजः पर्वत और आर्डेन की पहाड़ियों के बीच के दर्रे की रक्षा वर्डून और नैन्सी नगर करते हैं। इनके सामने मेट्ज़ का प्रसिद्ध किला है।

२—पिरेनीज़ पर्वत फ्रान्स की दक्षिणी सीमा पर स्थित है। पिरेनीज़ की लम्बाई २६३ और अधिक से अधिक चौड़ाई ६० मील है। कम से कम चौड़ाई २० मील से भी कम है। बीच वाले भाग में वे सबसे अधिक चौड़े हैं। इनका पूर्वी सिरा पश्चिमी सिरे से कम चौड़ा है। पिरेनीज़ की दो पर्वत श्रेणियां हैं। विचित्र बात यह है कि सबसे अधिक ऊँची चोटियां प्रधान श्रेणी में नहीं हैं। वे दूसरी श्रेणी में पाई जाती हैं। पिकडेला मेलेडेटा की ऊँचाई १०,६८८ फुट और नेथाऊ चोटी की उंचाई ११,१६५ फुट है। बरफ से ढकी हुई चोटियों का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। पिरेनीज़ पूर्व से पश्चिम की ओर फैले हुये हैं लेकिन इनकी घाटियां उत्तर से दक्षिण को गई हैं। वे बहुत ही गहरे खड्ड

बनाती हैं। हिमागारों की बरफ का पिघला हुआ पानी लेकर नीचे उतरते समय पिरेनीज़ की नदियां बड़े सुन्दर प्रपात बनाती हैं। पिरेनीज़ के दर्रे प्रायः दुर्गम हैं। इनमें होकर फ्रान्स से स्पेन को रेल-मार्ग गये हैं। यह मार्ग केवल ग्रीष्म ऋतु में खुलते हैं। शीत काल में बरफ के कारण वे बन्द हो जाते हैं। कुछ दर्रे इतने दुर्गम हैं कि इनमें होकर खच्चर भी नहीं जा सकते हैं। पैदल मनुष्य भी उनको बड़ी कठिनाई से पार कर सकता है। पिरेनीज़ में हिमागारों से बनी हुई झीलों का प्रायः अभाव है। इस ओर की सबसे बड़ी लेनो झील (जो समुद्र तल से ७२१६ फुट की ऊँचाई पर स्थित है) लगभग आध मील चौड़ी और पौने दो मील लम्बी है। हिमागारों और झीलों की कमी होने पर भी पिरेनीज़ का दृश्य बड़ा मनोहर है। अटलांटिक महासागर के पड़ोस में (जहाँ बास्क लोग रहते हैं) पिरेनीज़ सब कहीं हरे भरे हैं। बीच वाले भाग में इनके हिमागारों, खड्डों और प्रपातों की छटा है। पूर्वी भाग में अफ्रीका की तरह पहाड़ सूखे और नंगे हैं। केवल कहीं कहीं कार्क और जैतून आदि के पेड़ हैं।

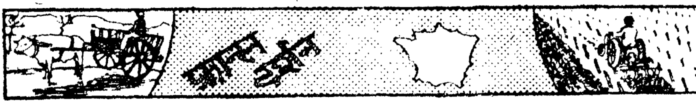


३—मध्यवर्ती पठार-योरुप के दूसरे पुराने पठारों की तरह फ्रांस का मध्यवर्ती पठार दानेदार कड़े पत्थर का बना है। इसके ऊपर हाल में ज्वालामुखी के लावा की तहें बिछ गई। इसके बीच बीच में चूने का पत्थर है। पठार के किनारों पर कोयले की खानें हैं। फ्रांस का मध्यवर्ती भाग कुछ कुछ आयताकार है और फ्रांस के दक्षिण में स्थित है। इसकी औसत ऊंचाई ३००० फुट है। समय समय पर इस पठार में बड़ी उथल पुथल हुई। और यह बहुत कट फट गया। इसी से इसमें छोटी छोटी नदियों और नालों का जाल सा बिछा हुआ है लेकिन इसकी धरती बड़ी कमज़ोर (एसिडा) है। पठार का उत्तरी-पश्चिमी ढाल क्रमशः और दक्षिणी-पूर्वी ढाल सपाट है। पठार का दक्षिणी-पूर्वी किनारा जहां उठ गया है वहीं फ्रांस का सेवनीज़ (Cevennes) पहाड़ है। इसकी ऊंचाई २००० से ५००० फुट तक है। घिसते घिसते इसकी चोटियां चपटी गुम्बदनुमा हो गई हैं। रोन घाटी की ओर पूर्व में सेवनीज़ का ढाल एकदम सपाट है। पश्चिम की ओर वे क्रमशः ढालू हो गये हैं। मध्यवर्ती पठार प्राचीन शान्त ज्वाला मुखी

पर्वतों से भरा पड़ा है। इनमें आवर्न (Auvergne) प्रधान है। इसके पास ही २० मील तक उत्तर से दक्षिण तक ७० नुकीली चोटीवाली पहाड़ियां फैली हुई हैं। इन्हें प्वी (Puy) कहते हैं। ये राख और लावा से बनी हैं।

कासास और सेगालस चूने की पहाड़ियों से बने हैं। इस चूने के पठार में पानी ऊपर नहीं रहने पाता है। धरती के भीतर पानी की असंख्य धारायें हैं। कहीं कहीं १०० फुट से ७०० फुट तक गहरे गड्ढे मिलते हैं जिन्हें एवेन (Avens) कहते हैं। कासास का अर्थ चूना है। इसके पश्चिम में सेगलस है। यहां राई बहुत उगती है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। (सेगिल का अर्थ ही राई है) है।

४—उत्तरी-पूर्वी उच्च प्रदेश—फ्रान्स का उत्तरी-पूर्वी उच्च प्रदेश मध्यवर्ती पठार से भी कम ऊँचा है। दक्षिण की ओर यह उच्च प्रदेश कोट डी ओर से आरम्भ होता है जो सेओन और लवायर की घाटी से सेन नदी के निकास तक फैले हुये हैं। आगे चल कर यह उच्च प्रदेश जर्मनी की सीमा के पास वोज़ः और बेल्जियम



की सीमा के पास आर्डेन्स (Ardennes) मिल गया है।

आर्डेन का अधिकतर भाग बेल्जियम और लक्सेमबर्ग में है। इनकी छोटी छोटी पहाड़ियां जंगलों से ढकी हुई हैं।

५—आर्मोरीकन पठार—उत्तरी-पश्चिमी फ्रान्स के त्रिभुजाकार प्राचीन पठार को अक्सर आर्मोरीकन पठार के नाम से पुकारते हैं। इसमें ब्रिटेनी और नार्मण्डी के पहाड़ी प्रायद्वीप शामिल हैं। इस प्रदेश का क्षेत्रफल १८,६०० वर्ग मील है। इनकी चट्टानें बड़ी बड़ी और पुरानी हैं। तर भाग में अभेद्य चट्टानें हैं जिससे वर्षा का पानी उनको भेदकर नीचे नहीं जाने पाता है। इससे ज़मीन के कटते कटते जगह जगह पर आखात और टीले बन गये हैं। जिस वर्ष वर्षा नहीं होती है उस वर्ष ज़मीन के नीचे भी पानी न मिलने से लोगों को बड़ा कष्ट होता है। कहीं कहीं कड़ी चट्टानों के ऊपर कई फुट मोटी मिट्टी की तहें बिछी हुई हैं। इसलिये कई भागों में खेती हो सकती है और जानवर पाले जाते हैं।

देश दर्शन

पेरिस-बेसिन

ऊंचे भागों को छोड़ कर फ्रांस के शेष भागों में मैदान है। पेरिस-बेसिन फ्रांस का सर्व प्रधान मैदान है। इसका क्षेत्रफल समस्त फ्रांस का चौथाई है। वास्तव में यह सेन और सोम नदियों का प्रवाह प्रदेश है और नार्मण्डी और अडोन के उच्च प्रदेश के बीच में स्थित यह मैदान अत्यन्त उपजाऊ है। इसके ऊपरी धरातल की मिट्टी नदियों के साथ लाई हुई काँप (कछारी मिट्टी) से बनी है। इस प्रकार पुरानी चट्टानों के प्रदेशों से घिरा हुआ यह अत्यन्त नई चट्टानों का प्रदेश है। सेन फ्रांस की सबसे बड़ी नदी है। यह कोट डी ओर के उत्तरी सिरे पर समुद्र-तल से १५०० फुट ऊंचे छः छोटे छोटे सोतों से निकलती है। निकास के पास यह बहुत ही छोटी है और ग्रीष्म ऋतु में कभी कभी सूख जाती है। आगे बढ़ने पर इसमें कई और नदियों का पानी आ मिला है। अपने कुटिल मार्ग में ४८२ मील बहने के बाद ला हाव्र से कुछ दूर इंगलिश चेनल में गिरती है। मुहाने से लेकर २३० मील तक सेन नदी में नावें चल सकती हैं। मुहाने से रूआं तक नदी इतनी

गहरी कर दी गई है कि इसमें मामूली जहाज (जिनकी तली पानी के नीचे २२ फुट डूबी रहती है) चल सकते हैं। पेरिस नदी के प्रायः मध्य भाग में स्थित है। इसके समीप ही सेन में योन, मार्न, आइस और सोम नदियाँ आ कर मिलती हैं। पेरिस बेसिन प्रायः समतल है। इससे यहां की नदियां एक दूसरे से और दूसरे भागों की नदियों से नहरों द्वारा जुड़ी हुई हैं। पेरिस-बेसिन के उत्तरी भाग में मार्न नदी के उत्तर में बढ़िया कच्चा लोहा पाया जाता है। इसका अधिकतर भाग गेहूँ आदि फसलों के लिये बड़ा अच्छा है। जहां खड़िया की चट्टानें हैं वहां अक्सर पीने योग्य चश्मे और चरागाह पाये जाते हैं। वहां लोग भेड़ पालते हैं। कुछ शहरों में ऊनी कपड़ा बुनने के कारखाने खुल गये हैं।

७—ल्वायर का बेसिन खेती के लिये बड़ा अच्छा है। यह सब कहीं उपजाऊ मिट्टी से ढका है। ल्वायर नदी सेवनीज़ प्रदेश के माउंट मेज़ेन से निकलती है। इसका निकास रोन नदी से केवल ३० मील दूर रह जाता है। ऊपरी भाग में ल्वायर नदी अपनी सहायक एलियर नदी की तरह उत्तर की ओर बहती है। अपने समस्त

मार्ग का एक चौथाई भाग तय करने के बाद रोने नगर (Roanne) के पास ल्वायर नदी नाव चलाने योग्य गहरी हो जाती है। ल्वायर नदी ५४३ मील लम्बी है। इसका प्रवाह प्रदेश ४६७५८ वर्ग मील है नेवर्स (Nevers) के पास ल्वायर नदी लावा के ऊँचे प्रदेश को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है। इससे कुछ ही ऊपर ल्वायर नदी में इसकी सहायक एलियर नदी मिलती है। इसके उत्तरी किनारे पर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। ल्वायर का मध्य भाग बड़ा मनोहर है। यहां पुराने समय के किले और आधुनिक समय के विशाल भवन अंगूरों के बगीचों, चरागाहों और लह-लहाते हुये खेतों के बीच में बड़े सुन्दर लगते हैं। आर्लि-यन्स के पास पेरिस से दक्षिण की ओर आने वाला फ्रांस का राज-मार्ग ल्वायर नदी को पुल द्वारा पार करता है। आर्लियन्स के आगे नदी के किनारे नीचे हैं। बसन्त ऋतु में इसके ऊपरी भाग की बरफ तेज़ी से पिघल जाती है। इससे कभी कभी ल्यावर के निचले भाग में भयानक बाढ़ आती थी। इस बाढ़ को रोकने के लिये नदी के किनारों पर कुछ दूर तक बांध बना दिये

हैं। पुराने बाँध केवल १० फुट ऊँचे थे। कुछ समय बाद ऊपरी भाग से मिट्टी लाकर नदी ने अपनी तली को ऊँचा कर लिया। इस लिये बाद में २३ फुट ऊंचे बांध बनाने पड़े। भविष्य में सम्भवतः बाँधों को और अधिक ऊँचा करना पड़ेगा। चेर, इन्दर, त्रियन, सेवर, नान्तेज़ आदि नदियां ल्वायर के बायें किनारे पर आकर मिलती हैं। ल्वायर प्रदेश का सबसे बड़ा नगर और प्रधान बन्दरगाह नान्ते है। नान्ते के पास ही ल्वायर नदी के दक्षिण में मीठे पानी की एक छोटी झील है।

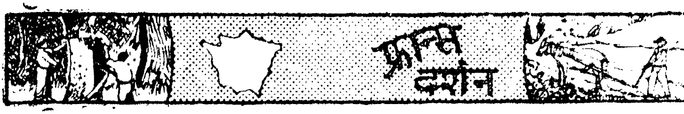
८—गेरोन-बेसिन—बहुत उपजाऊ है। इसी से मध्यकाल में एक्वेटेन नाम का यहां एक स्वाधीन राज्य स्थापित हो गया था। गेरोन और इसकी सहायक नदियों की घाटियों में अन्न, तम्बाकू और अंगूर खूब होते हैं। मध्यवर्ती पठार और पिरेनीज़ के बीच का संकुचित दर्रा कर्केसोन का द्वार कहलाता है। रोमन लोग इसी द्वार से फ्रांस (प्राचीन गाल देश) में घुसे थे। कर्केसोन शहर इस मार्ग की रक्षा करता था। शहर को चारदीवारी द्वारा सुदृढ़ बना लिया गया था। गेरोन

नदी स्पेन में आरान की ऊंची घाटी से निकलती है। संगमरमर की चट्टानों को काट कर गहरी कन्दरा बनाती हुई गेरोन नदी फ्रांस में प्रवेश करती है। बोर्डो के ऊपर एरियज, टार्न, लाट आदि कई नदियां गेरोन नदी में आकर मिलती हैं। बोर्डो से कुछ नीचे की ओर इस प्रदेश की सर्व प्रसिद्ध डार्डोन (Dordogne) नदी गेरोन नदी में मिलती है। डार्डोन नदी आवर्न पर्वत से निकलती है और बीच के मैदान को पार करके गेरोन नदी में मिलती है। संगम के आगे गेरोन नदी जीरोण्ड (Gironde) नाम की विशाल एस्चुअरी (खुला मुहाना) बनाती है। यहां छोटी छोटी असंख्य बालू की दीवारें हैं। जीरोण्ड एस्चुअरी से पिरेनीज़ पर्वत तक लगभग ७ मील चौड़ी लैंडीज़ नाम की रेतीले टीलों की पेटी है। पिरेनीज़ से निकल कर इधर गिरने वाली छोटी छोटी नदियों के मुहाने इन रेतीले टीलों ने भर दिये हैं। बालू को भीतर की ओर बढ़ने से रोकने के लिये समुद्री देवदारु के पेड़ लगा दिये गये हैं। इससे अच्छी भूमि को बड़ा लाभ हुआ है लेकिन नये बन की पेटी में भेड़ों की संख्या के घटने से जन संख्या भी घट गई है।

९—रोन घाटी—पश्चिमी अल्पस और फ्रान्स के मध्यवर्ती पठार (सेवनीज़) के बीच में रोन-सेओन की दरार वाली घाटी है। रोन नदी ५०५ मील लम्बी है। इसका निकास स्विज़रलैंड में है। अपने पहाड़ी मार्ग में उछलती कूदती हुई रोन नदी मटोला पानी लेकर पहले जनेवा झील में गिर पड़तो है। जनेवा शहर के पास कुछ साफ पानी लेकर रोन नदी जनेवा झील से बाहर निकलती है। जनेवा शहर के आगे १२ मील बाद रोन नदी फ्रान्स में प्रवेश करती है। उत्तरी सीमा से लेकर लिओन नगर तक रोन की धारा तीर के समान तेज़ चलती है। लिओन शहर के पास सेओन नदी रोन में मिलती है। सेओन की धारा अधिक चौड़ी और गहरी है। यह बहुत ही मन्द गति से बहती है। संगम के आगे भी कुछ दूर तक रोन का उछलता हुआ सफेद जल पृथक मालूम होता है। लिओन के आगे अल्पस पर्वत से निकलने वाली आर्व, ईसेर, ड्रोन, ड्यूरेन्स नदियाँ बाईं ओर से रोन में आ मिलती हैं। इनमें अचानक बाढ़ आती है। इसलिये इनके मिलने से जहाँ रोन का पानी बढ़ता है वहाँ उसकी धारा भी कुछ तेज़

हो जाती है। इन सहायक नदियों में वर्षा के समय और बरफ पिघलने पर तेज़ बाढ़ आती है। शेष अवसरों पर वे सिकुड़ जाती हैं। जो सहायक नदियां दाहिनी ओर से आती हैं वे सेवनीज़ के चूने के स्रोतों से आती हैं। उनकी धारा प्रायः वर्ष भर अधिक समान रहती है। निचले भाग में ड्यूरेन्स नदी का पानी सींचने के काम आता है। रोन की उत्तर में सेओन की घाटी अधिक चौड़ी और अधिक उपजाऊ है। सेओन अपनी सहायक डौब्स और एन नदियों का पानी लेकर लिओन के पास रोन में मिलती है। ऊपरी रोन और दूसरी पहाड़ी नदियों से जो बिजली तयार की जाती है वह लिओन के बड़े काम की होती है।

लिओन के आगे दक्षिण की ओर रोन नदी और अधिक उपयोगी हो जाती है। इसी मार्ग से प्राचीन रोमनों ने उत्तर की ओर बढ़कर पश्चिमी योरूप में सभ्यता फैलाई थी। इस समय भी इसी घाटी में होकर फ्रान्स का प्रधान रेल मार्ग दक्षिण की ओर गया है। इसके किनारों के पास वाली भूमि बड़ी उपजाऊ है। रोन का डेल्टा अधिक उपयोगी नहीं है। यह दलदलों



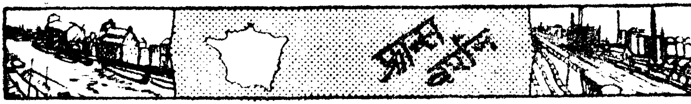
से भरा पड़ा है। इसी से मार्से या मार्सेल्स बन्दरगाह डेल्टा से दूर पूर्व की ओर बसाया गया था।

दक्षिण की ओर भूमध्यसागर का कोर्सिका द्वीप फ्रान्स के ही अधिकार में है। इसका क्षेत्रफल ३००० वर्ग मील है। यह एक प्राचीन स्थल समूह का अंग है जो समुद्र में डूब गया। कोर्सिका उसका बचा हुआ भाग है। इस बिल्लौरी चट्टानों के टीले बहुत हैं। इनके बीच बीच में छिपी हुई घाटियां हैं। पूर्व की ओर द्वीप का तटीय मैदान बड़ा उपजाऊ है। लेकिन इसमें दलदल बहुत है।

जलवायु

फ्रांस का देश उत्तर की ओर उन अक्षांशों में स्थित है जहां पछुआ हवायें चला करती हैं। दक्षिणी भाग विशेषकर (रोन की निचली घाटी) में भूमध्य सागर की जलवायु है जहां पछुआ हवायें शीतकाल में पानी बरसाती हैं। फ्रांस की आनुपातिक (औसत) वार्षिक वर्षा २६ इंच है। पर समुद्र से दूरी, ऊँचाई और अक्षांश के अनुसार फ्रान्स के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न प्रकार की जलवायु है।

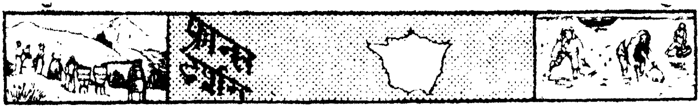
फ्रांस के मध्यवर्ती पठार की जलवायु विषम है। सरदी और गरमी की ऋतु के तापक्रम में अधिक अन्तर रहता है। सरदी की ऋतु अधिक लम्बी होती है। इस ऋतु में दो तीन महीने बरफ गिरती है और ओला पड़ता है। हवायें बहुत ठंडी चलती हैं। बसन्त ऋतु छोटी और कुछ ठंडी होती है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत गरमी पड़ती है। पतझड़ का ऋतु बड़ा सुहावना होता है। इस ऋतु में खूब धूप होती है और फल पक जाते हैं। अच्छे ढालों पर अंगूरों के बगीचे लगे हैं। मध्यवर्ती पठार में ४० से ६० इंच तक वर्षा होती है। अधिकतर वर्षा बसन्त और पतझड़ में होती है। शीत-



काल में इतनी बरफ गिरती है कि कभी कभी रास्ते बन्द हो जाते हैं। बरफ अक्सर मई महीने तक ज़मीन पर पड़ी रहती है। पृथ्वी डी डोम का जनवरी महीने का तापक्रम २८ अंश फारेन हाइट और जुलाई का तापक्रम ५२ अंश फारेन हाइट रहता है। रोन घाटी की जलवायु पर अटलांटिक का बहुत कम असर पड़ता है। इसलिये यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय है। उत्तरी भाग अधिक ठंडा है। शीतकाल में सब कहीं पाला पड़ता है और ग्रीष्म में बड़ी गरमी पड़ती है। लिओन नगर में जनवरी का तापक्रम ३४ अंश और जुलाई तापक्रम ६८ अंश रहता है। यहां की वार्षिक वर्षा ३३ इंच होती है। फ्रांस का दक्षिणी भाग सबसे अधिक गरम और खुश्क है। शीत काल में दो तीन हफ्ते तक पाला पड़ता है। इसी समय मिस्ट्रल नामी बड़ी ठंडा हवा उत्तर की ओर से चला करती है। गरमी की खुश्क ऋतु में कड़ी गरमी रहती है। वर्षा गरमी समाप्त हो जाने पर होती है। जब पानी बरसता है तब ज़ोर से बरसता है। मार्से या मार्सेलस नगर में साल भर में २२ इंच पानी बरसता है। जनवरी तापक्रम ४३ अंश और जुलाई तापक्रम ७२

अंश फारेन हाइट रहता है। दक्षिण में कोर्सिका द्वीप की जलवायु भी भूमध्यसागरीय है लेकिन ऊँचाई के कारण गरमी का तापक्रम कुछ कम हो जाता है। गेरोन की घाटी या एक्वोटेन का निचला प्रदेश इतना दक्षिण में है कि यहां विकराल सरदी नहीं पड़ने पाती अटलाँटिक महासागर की ओर से आने वाली हवायें यहां की सरदी और गरमी को कम करके मध्यम (शीतोष्ण) बना देती हैं। पछुआ हवायें यहां साल भर पानी बरसाती रहती हैं। बोर्डो का जनवरी तापक्रम ४० और जुलाई तापक्रम ६८ अंश फारेन हाइट रहता है। वर्षा ३४ इंच होती है।

पेरिस बेसिन की जलवायु कुछ शीतोष्ण है। वर्षा पर्याप्त होती है और साल भर होती रहती है। पेरिस के समीप वर्ष में २४ इंच पानी बरसता है। ऊँचे भागों में ४० इंच तक पानी बरस जाता है। पेरिस का जनवरी तापक्रम ३७० अंश और जुलाई तापक्रम ६५ अंश फारेन हाइट रहता है। तटीय भाग अधिक समशीतोष्ण रहते हैं। भीतर के भाग गरमी में कुछ अधिक गरम और सरदी में अधिक ठंडे हो जाते हैं।



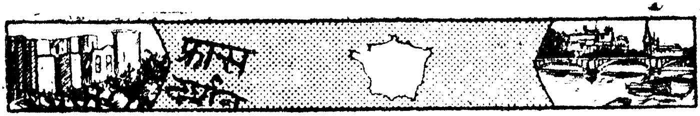
ब्रिटेनी और नारमण्डी के आमेरीकन पठारी प्राय-द्वीप की जलवायु समुद्रीय है। ग्रीष्म ऋतु शीतल रहती है। यहां बादल भी बहुत रहते हैं। शीतकाल में कुछ अधिक ठंड पड़ती है। वर्षा खूब होती है और प्रायः साल भर होती रहती है।



वनस्पति

फ्रान्स के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न प्रकार की जलवायु और मिट्टी पाई जाती है। इसी से फ्रान्स में कई प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। देवदारु के पेड़ अधिक ऊँचे और समुद्र के समीप वाले रेतीले भागों में पाये जाते हैं। कुछ भागों में सिन्दूर, मेपिल आदि पेड़ पाये जाते हैं। दक्षिणी-पूर्वी भाग फ्रान्स का बगीचा कहा जा सकता है। यहां शहतूत, ज़ैतून और दूसरे पेड़ बहुत पाये जाते हैं। अल्प्स के अत्यंत ऊँचे भागों में बरफ है। उसके नीचे गरमी की ऋतु में घास उगती है। इसके नीचे देवदारु और दूसरे पेड़ों का वन है। फ्रांस की प्रायः ढाई करोड़ एकड़ भूमि वनों से घिरी है। भूमध्य सागर के तट और रेतीले टीलों को छोड़कर फ्रांस के सभी भागों में उग सकते हैं।

अल्प्स और वाज़ के वन बड़े उपयोगी हैं। यहां कोयला, कागज़, छड़ी, मेज़, कुर्सी, खिलौना आदि बहुत सी चीजें बनाई जाती हैं। फ्रांस के निचले भागों में पत्ती गिराने वाले पेड़ होते हैं। पोप्लार और विलो (झाऊ?) के पेड़ फ्रांस में प्रायः सब कहीं पाये जाते हैं।



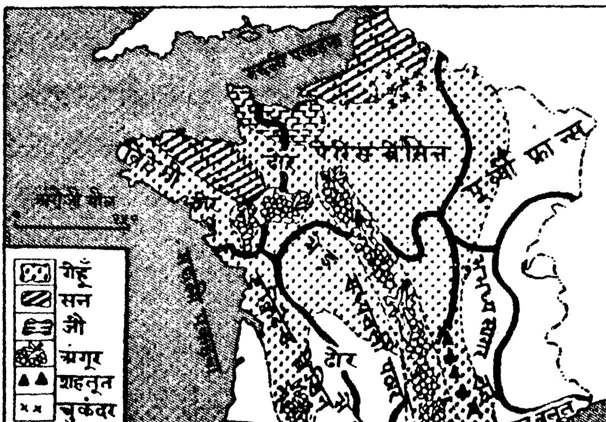
बादाम के पेड़ फ्रांस के खुश्क भागों में लगाये गये हैं। दक्षिणी भागों में जैतून के पेड़ मिलते हैं।

बनों के कम हो जाने से फ्रांस में जंगली जानवर भी कम हो गये हैं लेकिन अनुकूल स्थानों में पालतू जानवर काफी संख्या में पाये जाते हैं। गाय-बैल (बाछ या बछड़ा) ऊँचे चरागाहों में पाले जाते हैं। मोटा करने के लिये किसान उन्हें फिर नीचे ले आते हैं। जिन भागों में छोटी घास होती है वहां भेड़ें पाली जाती हैं। पेरिस बेसिन के उत्तर, ब्रिटेनी और मध्यवर्ती पठार में भेड़ें बहुत पाली जाती हैं। गाय-बैल और घोड़े फ्रांस के आवर्न, ओज़ आदि कई भागों में पाले जाते हैं।

कृषि

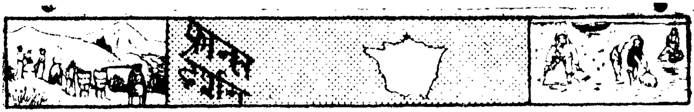
फ्रांस की ८५ फी सदी ज़मीन पौधों के उगने योग्य है। इसमें ४१ फी सदी भूमि में अन्न की फसलें, २० फी सदी में चरागाह, १८ फी सदी में बन, ३ फी सदी में अंगूर और २ फी सदी में तरह तरह की तरकारियां उगाई जाती हैं। फ्रान्स में खेत बहुत से हमारे

हिन्दुस्तान के साधारण किसानों के खेतों से तो बड़े हैं लेकिन अमरीका आदि दूसरे देशों के खेतों से बहुत छोटे हैं। फ्रान्स में समस्त खेतों की संख्या प्रायः ३० लाख है। यहां ज़मींदारी प्रथा नहीं है। किसान



कृषि और प्राकृतिक प्रदेश —

ही अपने खेत का स्वामी होता है। इसलिये वहां के किसानों ने खेती में बड़ी उन्नति की है। औसत से प्रत्येक किसान का खेत १७ एकड़ होता है। जलवायु,



ऊँचाई और मिट्टी के अनुसार फ्रांस के किसान भिन्न भिन्न भागों में भिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं।

गेहूँ फ्रान्स की प्रधान फसल है। मिट्टी में भेद होने से गेहूँ की जाति में भी अन्तर पड़ गया है। समस्त फ्रांस की १० फी सदी भूमि में गेहूँ उगता है। चूने के पत्थर वाला बड़ा पठार, पेरिस के समीप का मैदान और दूसरे मैदान गेहूँ की फसल के लिये प्रसिद्ध हैं। इन भागों की ज़मीन उपजाऊ है। गरमी और पानी भी पर्याप्त है। पानी भलीभांति बह जाता है। इसलिये फ्रांस के इन भागों में गेहूँ अधिक होता है।

ऊँचे भागों की ज़मीन इतनी ऊसर है और वहां इतनी बदली रहती है कि गेहूँ नहीं उग सकता है।

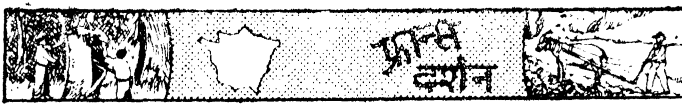
जई के लिये अत्यन्त आर्द्र (नम) जलवायु की आवश्यकता होती है। इसलिये जई फ्रांस में अटलांटिक तट के मैदानों में होती है। लिओन के उत्तर में स्थित कुछ अन्य स्थानों में भी जई की फसल उगती है। जई अधिकतर गाय-बैल और घोड़ों के चारे के लिये उगाई जाती है। जई और गेहूं के समीप जिन भागों की ज़मीन कम उपजाऊ होती है वहां राई (विलायती

बाजरा) की फसलें होती है। यह अधिकतर ऊँचे पठार के उत्तर में होती है। इसका अन्न रोटी बनाने और तिनका टोपी (हैट) बनाने के काम आता है।

जौ फ्रांस की बड़ी फसल नहीं कही जा सकती। जो जौ यहां उगाया जाता है वह शराब बनाने के काम आता है। अधिकतर जौ फ्रांस के उत्तरी-पश्चिमी भागों में उगाया जाता है।

बक व्हीट—की फसल भी राई की तरह कम उपजाऊ भागों में उगाई जाती है। यह आर्मोरोकन पठार के पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में उगाई जाती है। वहां के गरीब किसान इसी की रोटी खाते हैं।

मकई—यह फ्रांस के दक्षिणी-पश्चिमी भागों में उगती है। यहां गरमी बहुत पड़ती है, वर्षा खूब होती है और पाला भी नहीं पड़ता है। कई भागों में मकई चारे के लिये उगाई जाती है। चारे के लिये किसान लूसर्न और दूसरी तरह की घास भी उगाते हैं। फ्राँस के कई भागों में आलू की खेती बढ़ रही है। मनुष्यों के भोजन के अतिरिक्त आलू



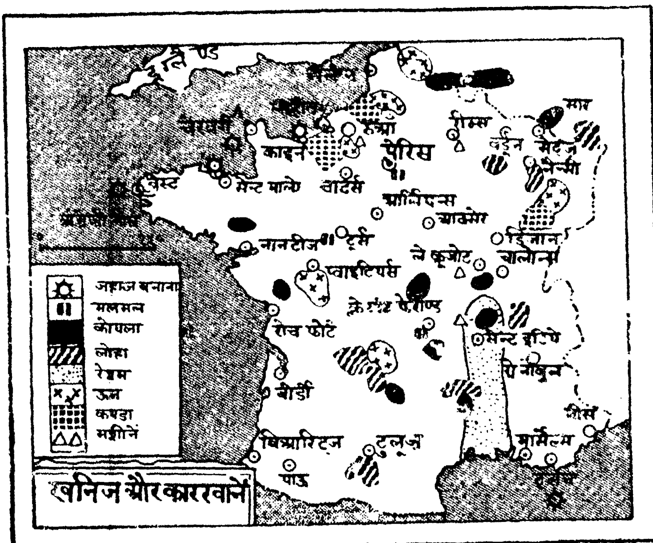
शराब बनाने और सुअरों को खिलाने के काम आता है चुकन्दर चीनी बनाने के काम आता है और प्रायः उन सब भागों में उगाया जाता है जहां गेहूँ उगाया जाता है। चुकन्दर की फसल अधिकतर उत्तरी-पश्चिमी और पूर्वी भागों में होती है।

अंगूर—शराब बनाने के लिये संसार भर में फ्रान्स का प्रथम स्थान है। यहाँ जितने प्रकार की शराब बनाई जाती है उतने प्रकार की शराब संसार के और किसी देश में नहीं बनाई जाती है। फ्रांस में अंगूर उगाने के लिये कई अनुकूल प्रदेश हैं। केवल उत्तरी-पश्चिमी भागों में नमी की अधिकता और धूप की कमी के कारण अंगूर की लतायें नहीं हो पाती हैं। इन भागों में लोग सेब उगाते हैं और जौ की शराब पीते हैं। मध्यवर्ती पठार का ऊसर भाग भी अंगूर के लिये अनुकूल नहीं है। इसी प्रकार पश्चिमी पिरेनीज़ की पहाड़ियों में भी अंगूर नहीं उगता है। लेकिन पेरिस बेसिन एक्वीटेन, बार्डो, बर्गण्डी शेम्पेन में अंगूर बहुत होता है। ल्वायर घाटी और रोन-सओन घाटी में कम अंगूर होता है लेकिन यहाँ का अंगूर बड़ा बढ़िया होता है। अंगूर काफी

पाला सह सकता है लेकिन अंगूर के लिये मामूली वर्षा और ग्रीष्म ऋतु के अन्तिम समय से लगातार धूप होनी चाहिये। अंगूर की लम्बी जड़ें काफी गहराई तक पहुंच कर नमी प्राप्त कर सकती हैं।

कारबार

गत बड़ी लड़ाई के बाद फ्रान्स को अल्सेस लारेन के प्रदेश मिल गये। इससे फ्रान्स को कच्चे लोहे और कोयले की बड़ी बड़ी खानें मिल गईं। इसी से फ्रान्स एक बड़ा कारबारी देश बन गया। फिर भी यहां कोक

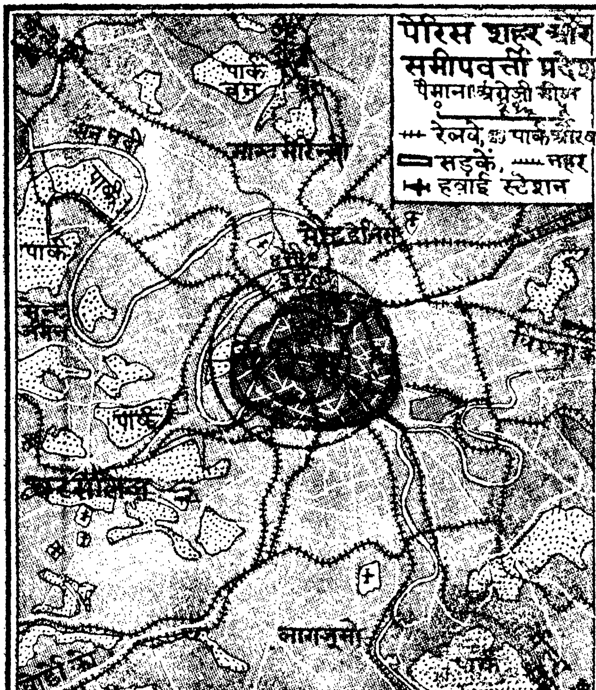


खनिज और कारखाने

(बारीक कोयला) बनाने योग्य कोयले की कमी है। धातु के कारखानों में कोक की बड़ी आवश्यकता पड़ती है। लेकिन कोयले की अधिकता होने और ऊन और

फ्लैंक्स के मिलने से उत्तरी फ्रान्स में कपड़े के कारखाने खुल गये हैं। वोजः की घाटियों में पुराने कारीगरों की अधिकता होने और बिजली मिलने से कपड़े के कारखाने चल रहे हैं। पूर्वी पहाड़ी प्रदेश में धातु का काम होता है लियोन का प्रदेश भी फ्रान्स में एक प्रधान कारबारी प्रदेश है। कारखाने किसी एक स्थान पर न होकर रोन की समस्त मध्य घाटी और निचले भाग में फैले हुये हैं। कुछ कारखाने ल्वायर घाटी की ओर भी फैल गये हैं। कारखाने लिओन से आरम्भ होकर सब ओर को फैले हुये हैं। कुछ कारखाने अल्प्स और आवर्न की घाटियों में भी पाये जाते हैं। कारखानों के दूर दूर बिखरे होने का एक कारण यह है कि सेंट इटियें, केसार ब्लॉज़ी आदि की कायले की खानें और अल्प्स की विद्युत् प्रदान करने वाली तेज़ धारायें दूर दूर फैली हुई हैं। जैसे रेगिस्तान के बीच बीच में नखलिस्तान होते हैं वैसे ही फ्रान्स के कृषि प्रदेश के बीच बीच में कारखाने फैले हुये हैं। यूं तो यहां रसायन धातु और कपड़े के भी कारखाने हैं लेकिन लिओन के प्रदेश में रेशम का कारबार प्रधान है। शहतूत के पेड़ों की भरमार होने

से यहां कच्चा रेशम बहुत मिलता है। कुछ कच्चा रेशम इटली से आता है।



पेरिस के समीप वाले प्रदेश में रेल सड़क और जल-मार्ग से आने जाने की सुविधा होने के कारण कारखाने

फैल गये हैं। इधर मज़दूरों और ऊँचे दर्जे के कारीगरों की भी अधिकता है। पेरिस में ही इंगलिश चेनल और उत्तर के मार्ग आकर मिलते हैं। पेरिस के समीप मार्न और ओइस नदियों के किनारे किनारे कारखाने फैले हुये हैं। यहां भोग-विलास के सामान, मोटर, इँजीनियरिंग आदि कई प्रकार के कारखाने हैं। रुआं में कपड़े के कारखाने बहुत हैं। यहीं से पेरिस को कोयला, तेल और मकान बनाने का सामान मिलता है। रुआँ में ऊनी-सूती कपड़े इतने अधिक बनते हैं कि यह फ्रान्स का चेस्टर कहलाता है। ला हावर और निचली सेन घाटी भी कारबारी प्रदेश है। ला हावर बन्दरगाह द्वारा बाहर से रुई और दूसरा कच्चा माल मिल जाता है। निचली ल्वायर घाटी का प्रधान कारबारी केन्द्र नान्तेज़ है। इसी से मिला हुआ सेंट नाजेर है। यहां जहाज़ बनाने और धातु के बड़े बड़े कारखाने हैं। स्थानीय कच्चे माल और कारीगरी की सुविधा के अनुसार फ्रान्स के पूर्वी पहाड़ी भागों में खिलौना, घड़ी, कागज़, गोटा आदि बनाने का बहुत काम होता है। फ्रांस में बड़े बड़े कारखानों के साथ साथ छोटे छोटे घरेलू धन्धे भी बहुत हैं।

देश दर्शन

फ्रान्स के लोहे और इञ्जीनियरी के बड़े बड़े कारखाने सेएट इटियें और ले क्रूसो (क्रूसोट) में स्थित हैं। लिल शहर मलमल के कारबार का केन्द्र है। एमियन्स में मखमल के कारखाने हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम लिमोजा (Lmoges) और सेवर्स में होता है। गोबेलिन्स नगर में बढ़िया दरी और कालीनें बनती हैं। अल्मोनियम की उपज और कारबार के लिये फ्रान्स संसार भर में प्रसिद्ध है। अल्मोनियम को बाक्साइट भी कहते हैं। रोन घाटी में १८२२ ई० में यह धातु पहले पहल फ्रान्स के बाक्स (Baux) गांव में मिली। इसी से इसका नाम बाक्साइट पड़ गया।

देश दर्शन

फ्रान्स की विद्युत् शक्ति

विद्द्युत् शक्ति के विकाश के लिये संसार में फ्रान्स का चौथा स्थान है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका, जर्मनी और ब्रिटेन ही तीन ऐसे देश हैं जो विद्द्युत् शक्ति के विकास में फ्रांस से आगे हैं। फ्रांस में प्राय. आधी विद्युत शक्ति कोयले की सहायता से तयार की जाती है। आधी विद्युत शक्ति बहते हुये जल की शक्ति से तयार की जाती है। जो विद्युत् शक्ति कोयले से तयार की जाती है उसकी मशीन महँगी नहीं होती है। इसमें कोयला भी अच्छा नहीं जलाया जाता है। कोयले से कुछ गौण पदार्थ भी निकाले जाते हैं। जो विद्युत् शक्ति जल की सहायता से तयार की जाती है उसकी मशीन बड़ी महँगी होती है लेकिन वह बहते पानी के ज़ोर से चलती है। इसलिये उसे रोज रोज चलाने में कुछ भी खर्च नहीं होता है।

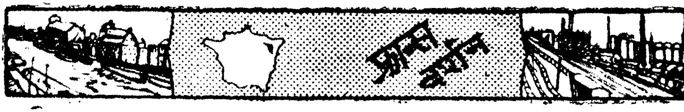
फ्रांस में राइन और रोन दो नदियों से सबसे अधिक विद्युत् शक्ति तयार की जाती है। राइन नदी में जहां पर हनिंग (Hunigue) नहर मिलती है। वहीं पर जलज विद्द्युत् शक्ति का सबसे बड़ा स्टेशन केम्ब्स है।

केम्ब्स में जल प्रपात ३५ फुट से ५२ फुट तक रहता है। इससे ८ या नौ लाख हार्स पावर (अश्व शक्ति) की बिजली तयार होती है। अल्पायन रोन में बेलोगार्ड (Bellegarde) के पास लगभग दो लाख अश्व शक्ति की बिजली तयार होती है। लिओन के पास जोनांज ९ लाख किलोवैट बिजली तयार होती है। यदि इतनी बिजली कोयले से तयार की जाय तो प्रति दिन ५० लाख टन कोयला खर्च हो।

फ्रान्सीसी अलप्स, पिरेनीज़ और मध्यवर्ती फ्रांस की जलज विद्युत् शक्ति के प्रधान स्रोत हैं। फ्रांसीसी अलप्स से निकलने वाली धाराओं में सुन्दर प्रपात हैं। ग्रीष्म काल में इनसे सस्ती बिजली तयार की जा सकती है। लेकिन शीत काल में वे जम जाते हैं। नदियों का बहाव कम हो जाता है। इसलिये शीतकाल में सब कहीं इनसे बिजली नहीं तयार की जा सकती। फ्रान्सीसी अल्प्स में झीलों का अभाव है। इसलिये शीतकाल के लिये जल इकट्ठा करने की जो सुविधा स्विज़रलैंड और इटली में है वह फ्रान्स में नहीं है। इस दृष्टि से

निचले अल्प्स और मध्यवर्ती पठार में जो शीत काल में वर्षा हो जाती है वह फ्रांस के बड़े काम की होती है।

फ्रांस में शहरों के अतिरिक्त गांवों में भी बिजली पहुँचाई गई है। लारेन, ईसेर और सेवाय के डिपार्टमेन्टों (ज़िलों) में सबसे पहले बिजली पहुँचाई गई। लियोन जिले में बड़ी दूर से बिजली आती है। रोन घाटी की विद्युत् शक्ति सेएट इटियें में खर्च हो जाती है इसलिये ऊपरी ईसेर से लिओन को बिजली मिलती है। भूमध्य सागर के तट पर स्थित नमक, पाउडर और सीमेण्ट के कारखानों को अल्प्स की धाराओं से बिजली मिलती है। कारखानों के अतिरिक्त प्रधान नगरों की ट्रैम गाड़ियां भी बिजली से चलती हैं। पिरेनीज़ की अडूर नाइव, ग्रेव डी पाओ और ओलोरान नदियों से उन कारखानों को बिजली मिलती है जिनसे पिरेनीज़ की रेलें चला करती हैं। टूलूज़ के रसायन और बारूद के कारखानों को भी यहीं की बिजली से शक्ति मिलती है। मध्यवर्ती पठार में डोर्डोन (Dordogne) की घाटी में सबसे अधिक बिजली तयार की जाती है यह बिजली आर्लियन्स (Chemin de yer d orleans) को जाती है।



आने जाने के मार्ग

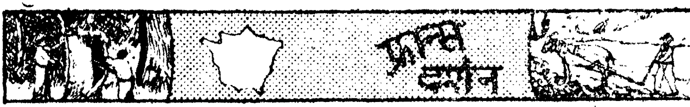
सड़कें—उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस की सड़कें लगभग ४८००० मील लम्बी थीं। रेलवे के खुलने और बढ़ने से सड़कों की उन्नति में कुछ बाधा अवश्य पड़ी। फिर भी फ्रान्स की सड़क बड़ी अच्छी दशा में हैं। फ्रान्स की समस्त सड़कों की लम्बाई का योग लगभग ४ लाख मील है। इसमें २६००० मील राष्ट्रीय सड़कें हैं। राष्ट्रीय सड़कें प्रथम कोटि की हैं। इनकी चौड़ाई लगभग ६५ फुट होता है। अन्य प्रान्तीय सड़कें लगभग ४० फुट चौड़ी होती हैं। सड़कों पर पुल बनाने उनकी मरम्मत करने और उनको अच्छी दशा में रखने में बहुत खर्च होता है। सड़कों पर अधिकतर मोटर चला करते हैं। इसलिये फ्रान्स में पेट्रोल पर कर लगाया जाता है। इस कर (टैक्स) से जो आय (आमदनी) होती है वह सड़कों पर खर्च की जाती है। फ्रांस में लगभग २२ लाख मोटर और मोटर लारियां हैं। इनमें लगभग ६ लाख लारियां व्यापार के कार्य में लगी हैं।

देश दर्शन

रेलमार्ग—फ्रान्स की समस्त रेलों की लम्बाई २६००० मील है। पेरिस अपनी केन्द्रवर्ती स्थिति के कारण प्रायः सभी फ्रान्सीसी रेलवे का अन्तिम स्टेशन बन गया है। अटलांटिक तक बन्दरगाहों से सीधे रोन घाटी या भूमध्यसागर के तट पर जाने में मध्यवर्ती पठार बाधा डालता है। दक्षिण की ओर फ्रान्स की कुछ रेलें बिजली के जोर से चलती हैं। फ्रान्स की रेलवे लाइनों का प्रबन्ध वहां की ६ बड़ी बड़ी कम्पनियों के हाथ में है। फ्रान्स की ६ प्रधान रेलवे लाइनें निम्न हैं:—

१—उत्तरी (नार्ड) लाइन बोलोन, केलेलिल और दूसरे उत्तरी नगरों में होती हुई बेल्जियम ज़र्मनी के बर्लिन और रूस के लेनिनग्रेड शहर को गई है। उत्तरी रेलमार्ग का कुछ भाग समतल भूमि में स्थित है। अधिकतर भाग विषम है और सुरंगों द्वारा पहाड़ियों को पार करता है। नदियों के ऊपर ऊँचे पुल हैं।

२—पश्चिमी (इटाट) लाइन रूआं, हावर, डियप चेरबोर्ग और ब्रेस्ट को जाती है। यह उत्तरी पश्चिमी फ्रान्स की लाइन है। इसके मार्ग में सबसे अधिक समतल भूमि पड़ती है। लेकिन ब्रिटेन का कटा-फटा



(रियास) तट है । रेलवे को तट के पास असंख्य पुल बनाने पड़ते । इसलिये यह कुछ भीतर की ओर होकर चलती है । यह लाइन तट बन्दरगाहों और उत्तर के स्वास्थ्य-वर्द्धक स्थानों को जोड़ती है । इसलिये इस लाइन पर सबसे अधिक यात्री यात्रा करते हैं । २१ मील तक इसकी लाइन बिजली से चलती है । कुछ दूर तक (टूर्स से बोर्डो तक) दुहरी लाइन है । जिन स्थानों में इस लाइन की शाखायें नहीं हैं वहाँ मोटर लारियां चला करती हैं । इसकी माल गाड़ियाँ बहुत कम माल ढोया करती हैं । मालगाड़ियों में तट के बन्दरगाहों और पेरिस के लिये अक्सर ऐसा सामान रहता है जो शीघ्र बिगड़ जाता है । इसमें ताज़ी मछली, जमा हुआ मांस और फल रहते हैं । पेरिस और दूसरे बाजार वाले शहरों को भेड़ें और गाय भी जाती हैं ।

३—पेरिस—आर्लियन्स लाइन ल्वायर और गेरोन के प्रदेश में चलती है । इस लाइन में १४५ मील तक गाड़ियाँ बिजली के ज़ोर से चलती हैं । वह लाइन बड़े ऊंचे नीचे भाग में होकर चलती है । इसकी शाखायें यहां की (ब्राइव, अल्बी और आबिन) खानों को गई

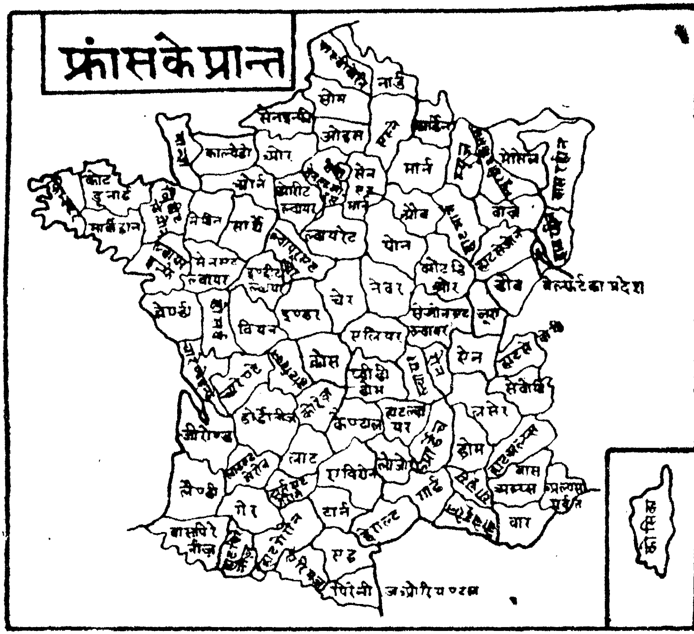
हैं। इसकी माल गाड़ियों में शराब अधिक रहती है। जहाजी कारखानों के लिये यह लोहा फौलाद और दूसरा सामान भी ढोती है।

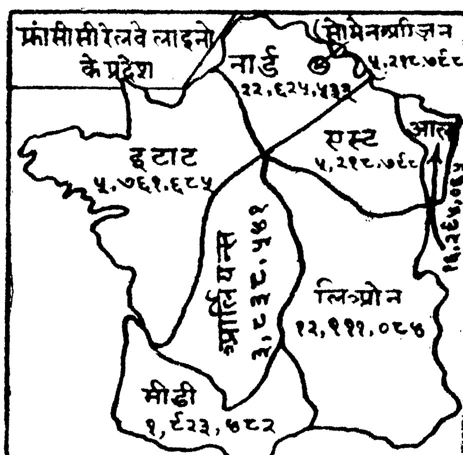
४—मीडी (दक्षिणी) लाइन की एक शाखा बेओन होकर स्पेन को और दूसरी (पूर्वी) शाखा टुलूज़ से बार्सिलोना (स्पेन) को गई है। इस लाइन में ४६० मील तक गाड़ियाँ बिजली से चलती हैं। बिजली अधिकतर पिरेनीज़ पर्वत के समीप मिलती है। बोर्डो से एक लाइन लेंडीज़ प्रदेश में होती हुई स्पेन की सीमा तक (बेओन) पहुँचती है। दूसरी लाइन गेरोन के किनारे किनारे चल कर करकेसोन के गेट (द्वारा) को पार करके टुलूज़ पहुँचती है। यहां यात्री कम चलते हैं। मालगाड़ियों में अधिकतर शराब रहती है।

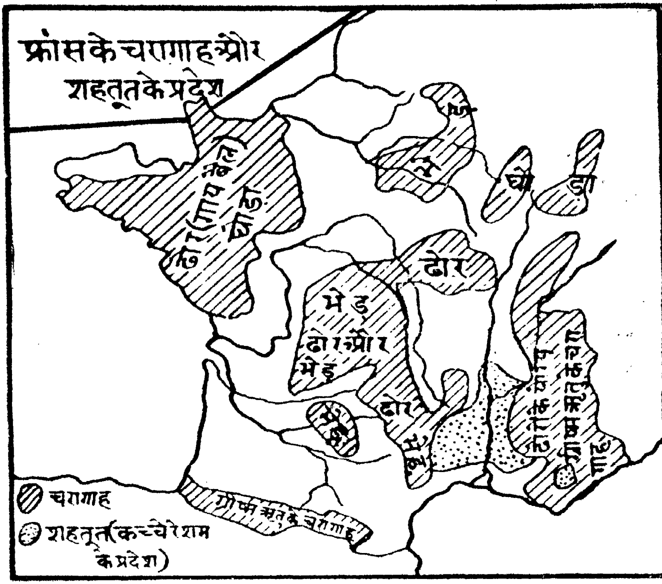
५—पेरिस-लिओन और भूमध्यसागर लाइन डिजान, मेकान (यहां से माउंट सेनिस सुरंग में होकर गाड़ियाँ इटली को जाती हैं।) लिओन और मार्सेल्स नगरों को जाती है। लिओन से मार्सेल्स तक लाइन दुहरी दी गई है। रेलवे लाइन रोन नदी के दाहिने

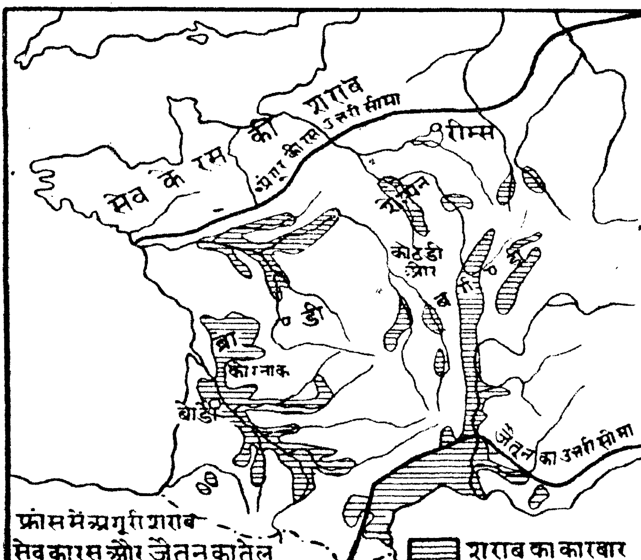


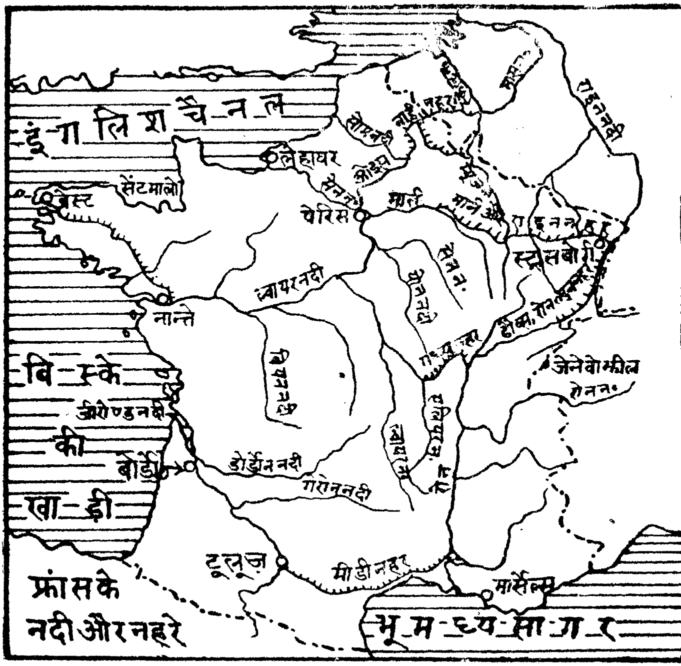
फ्रांस के प्राकृतिक प्रदेश


फ्रांस के प्रान्त
नार्ड
सोम
मार्न
नेवर
वार
पिरेनी
कोर्सिका

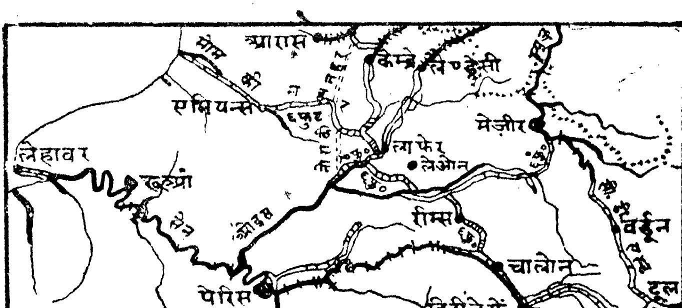

फ्रांसीसी रेलवे लाइनों
के प्रदेश
नार्ड
एस्ट
इटाट
मीढी


फ्रांस के चरागाह और शहतूत के प्रदेश
ढोर
भेड़
ढोर और भेड़
गर्मी की ऋतु के चरागाह
चरागाह
शहतूत (कच्चे रेशम के प्रदेश)

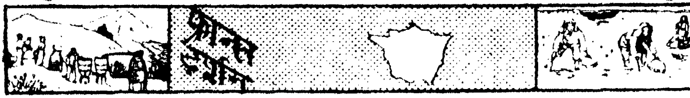

सेव के रस की शराब
रीम्स
कोगनाक
बोर्डो
जैतून का उत्तरी सीमा
फ्रांस में अंगूरी शराब
सेव का रस और जैतून का तेल
शराब का कारबार



फ्रांस के नदी और नहरे



पेरिस की उत्तरी कोयले की खानों से मिलाने वाले जल मार्ग



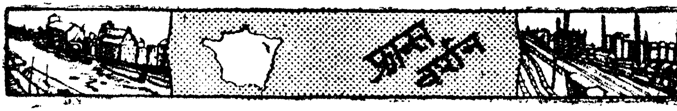
किनारे से चलती है। इस लाइन की कई शाखायें मध्यवर्ती ऊँचे पठार को गई हैं। यात्रियों की संख्या और सामान के भार के अनुसार इस लाइन का चौथा नम्बर (स्थान) है। इस लाइन की मालगाड़ियां कोयला, कोक, मकान बनाने का संगमरमर, दानेदार पत्थर, आग्नेय काला पत्थर, शराब, फूल, दूध, मछली, डाक के पैकेट, भेड़ और ढोर ढोया करती हैं।

६—पूर्वी (इस्टर्न) लाइन पेरिस बेसिन के पूर्वी भाग और लारेन होकर जर्मनी को जाती है। यह लाइन योरुप की अन्तर्राष्ट्रीय लाइनों को जोड़ती है। इसकी एक शाखा नैन्सी से जर्मनी को और दूसरी शाखा, बेल्फर्ट होकर अल्सेस और स्विज़रलैंड को गई है। यात्रियों की संख्या के अनुसार इस लाइन का दूसरा स्थान (नम्बर) है। इसकी माल गाड़ियां अधिकतर कच्चा लोहा और कोयला ढोती हैं।

जलमार्ग—फ्रांस में समस्त नाव चलने योग्य नदियों और नहरों की लम्बाई ६७७० मील है। अल्प्स से निकलने वाली धारायें इतनी तेज़ हैं कि उनमें नावें नहीं चल सकतीं। वैसे फ्रांस में वर्षा पर्याप्त होती है।

यदि साधारण रीति से फ्रांस में समस्त प्रवाह प्रदेश का जल किसी नदी में बह कर चला आवे तो वह नदी इतनी गहरी हो जाती है कि उसमें नावें चल सकती हैं। लेकिन फ्रांस के कुछ भागों में अभेद्य चट्टानें हैं। वर्षा का जल उन चट्टानों को पार कर भूमि के भीतर नहीं घुसने पाता। वरन् वह तेज़ी से बह कर नदियों में चला जाता है। इससे कुछ ऊँचे भागों की नदियाँ वर्षाकाल में धारा के वेग और शुष्क ऋतु में पानी की कमी के कारण नाव चलने योग्य नहीं रहतीं। खड़िया की चट्टानों वाले भाग में भी पानी इतनी अधिक मात्रा में पृथ्वी के भीतर घुस जाता है कि नदी में पर्याप्त पानी नहीं रहता है। पर साधारणतया फ्रांस की नदियाँ नाव चलाने के लिये बड़ी अच्छी हैं। फ्रांस के जल-मार्ग कई भागों में बँटे हुये हैं।

उत्तरी जल मार्ग उत्तरी फ्रांस (डन्कर्क, लिल कोयले की खानों) और बेल्जियम की नदियों से जुड़े हुये हैं। सेम्बर, एस्काल्ट, स्कार्प, लिस और आ इधर की प्रधान नदियाँ हैं। वे पेरिस बेसिन के जल मार्ग को लारेन और बेल्जियम से मिलाते हैं। इस प्रदेश में

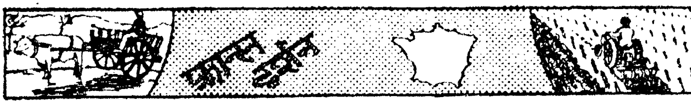


खड़िया के ऊपर चिकनी मिट्टी की मोटी तहें बिछी हुई हैं। इस ओर प्रबल वर्षा होती है। पठार से उतरने पर वे बिजली पैदा करने के लिये उपयोगी हैं। उनमें नावें नहीं चल सकतीं। लेकिन जब ये नदियां मैदान में प्रवेश करती हैं तो वे नाव चलने योग्य हो जाती हैं। सहायक नदियों के मिल जाने से उनमें पानी भी बढ़ जाता है। समतल भूमि में नहर खोदने में बड़ी सुगमता हुई है। नहरें एक ओर तटीय बन्दरगाहों और दूसरी ओर कोयले की खानों को जोड़ती हैं। इसलिये कारखाने वाले नगरों को कच्चा लोहा, बालू और चूना आदि भारी सामान पहुँचाने में ये नहरें बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। सेम्बर नदी का नाव चलाने योग्य थोड़ा सा भाग फ्रांस के भीतर है। लिस एअर (Aire) से बेल्जियम की सीमा तक नाव चलने योग्य है। स्कार्प और एस्काल्ट नदियां भी काफी दूर तक फ्रांस में नाव चलने योग्य हैं। ये नदियां एक दूसरे से और सेन नदी से नहरों द्वारा जुड़ी हुई हैं।

एअर और ड्यूट नहरें कोयले की उत्तरी खानों के लिये प्रधान जल-मार्ग हैं। एअर नहर लिस नदी

के किनारे बसे हुये एश्रर नगर में ड्यट नहर तक जाती है। इसकी लम्बाई २५ मील और गहराई ६ फुट है। कई खानों के पास नहर पर पक्के घाट बने हैं। यह पेरिस, रूबे, लिल और लिओन को आवश्यक भारी सामान पहुँचाने में सहायक होती है।

ड्यूल नहर कोयले की खानों में होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर एस्कार्प को जाती है। एस्कार्पेल से इसकी एक शाखा उत्तर की ओर लिल और रूबे क्षेत्रों होती हुई लिस नदी तक जाती है। इस नहर के मध्यवर्ती भाग (लिल) में बड़ा तेज़ व्यापार होता है। इसके ऊपर कोयले और चुकन्दर से भरी हुई नावें चला करती हैं। चुकन्दर बेल्जियम से फ्रांस में शक्कर के कारखानों में जाता है। यहीं डन्कर्क से ऊन, डोम्बासिल से सोडा, वारांगेविली और मूसे से नमक आता है। बेल्जियम से कोयला, खानों में लगाने के लिये लकड़ी के खम्भे और अन्न भी आता है। सब मिलकर लिल के समीप का व्यापार प्रति वर्ष पांच लाख टन से अधिक होता है। ड्यूल नहर के दक्षिणी भाग में और भी अधिक व्यापार होता है। सेन्सी और केण्टिन नहरें कोयले को ओइस,



सेन और पेरिस को पहुँचती हैं। सेन्सी नहर अन्य नहरों से अधिक गहरी है। इसकी गहराई ८ फुट है। सेन्स क्वेटिन नहर जिस सुरंग में होकर ओइस बेसिन की ओर आती है वह कुछ अधिक चौड़ा कर दिया गया है। इससे यह नहर पहले से अधिक माल ढोने में समर्थ हो गई है।

तटीय नहरें डन्कर्क आदि बन्दरगाहों को एक दूसरे से जोड़ती हैं। भीतर की ओर से नहरों द्वारा डन्कर्क बन्दरगाह में फ्रान्स से बाहर भेजने के लिये आटा, चिकोरी, खली और शक्कर आता है।

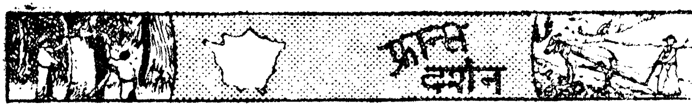
सोम नदी का व्यापार कम (साढ़े सात लाख टन) है। निचले भाग में इसकी तली के पास दलदल हो जाते हैं। नदी का मार्ग भी टेढ़ा है। इसके ऊपर अधिक तर कोयला ढोया जाता है।

पेरिस बेसिन के पूर्वी भाग में एस्ने (Aisne) ओइस, मार्न सेन और योन नदियों में नावें चलती हैं। कुछ नदियों में शीतकाल के अन्त में अचानक बाढ़ आ जाती है। योन नदी के किनारों पर कहीं कहीं दलदल

है। कहीं इसकी धारा बड़ी तेज़ और विषम है। इसी से योन नदी व्यापार के योग्य नहीं है। ओइस नदी का व्यापार लगभग ६० लाख टन होता है। मार्न नदी में सेन से भी अधिक व्यापार होता है।

पेरिस का कारबारी भाग शहर के ऊपर की ओर इव्री से लेकर नीचे की ओर गेन विलर्स तक फैला हुआ है। सेन नदी में व्यापार किसी एक अड्डे पर ही एकत्रित नहीं है। नदी पर मीलों तक व्यापारी घाट हैं। पेरिस शहर के भीतर आठ मील तक सेन नदी में नावें चलती हैं। शहर के भीतर नदी की गहराई १० फुट है। शहर में प्रधान नदी के अतिरिक्त कुछ नाव चलने योग्य नहरें भी बहती हैं। लेकिन पेरिस में नदी के ऊपर २७ पुल बने हैं इससे नावों के चलने में कठिनाई होती है।

सेन नदी का निचला भाग व्यापार के लिये अधिक अच्छा है। रुआं के नीचे ज्वार भाटा का असर पड़ता है। ज्वार आने पर नदी की गहराई कभी कभी केवल ढाई फुट रह जाती है। पेरिस और रूआं के बीच में कोयला, बालू, मकान बनाने का सामान, शराब, लकड़ी कच्चा लोहा (अफ्रीका से) कागज़ की लुब्दी आदि



सामान नावों से ढोया जाता है। रूआं को रूई रेल से आती है। राइन-मार्न नहर स्ट्रासबर्ग और विट्रीले फ्रेंसिस के बीच में १९५ मील लम्बी और साढ़े छः फुट गहरी है। ऊँचे नीचे भाग में स्थित होने के कारण नहर में कई झाल बने हैं। वोजः पर्वत को नहर दो सुरंगों द्वारा पार करती है। एक सुरंग डेढ़ मील लम्बी है। यह नहर कोयला, कोक, लकड़ी, लोहा और नमक ढोने के काम आती है। मेगनी के पास म्यूज़ नदी को पार करके म्यूज़ और पेरिस बेसिन के जल विभाजक के ऊपर चढ़ती है।

पूर्वी (एस्ट) नहर म्यूज़ के पास पास बेल्जियम की सीमा से राइन मार्न नहर तक आती है। यह २६० मील लम्बी और ७ फुट गहरी है। इसके मार्ग में १६० झाल और ४ सुरंगें हैं। यह नहर नैन्सी के दक्षिण में कच्चे लोहे के प्रदेश के बड़े काम की है। इस पर कोयला भी बहुत ढोया जाता है।

सार की खदानों की नहर राइन मार्न नहर से मिल जाती है। मार्न से ओन नहर विट्री ले-फ्रेंसिस के पास मार्न नदी से निकलती है। यह कच्चे लोहे, बन

और पठार में होती हुई ५५ मील में ४३ झालों द्वारा ज़ीने की भांति पठार से उतरती है।

राइन रोन नहर स्ट्रास बर्ग के पास इल नहर से निकलती है। इस नहर में ३०० टन बोझा ढोने वाली नावें चल सकती हैं।

बर्गण्डी नहर योन नदी में आर्मेन्सन के संगम के पास मिलती है। आर्मेन्सन नदी के मार्ग में इस नहर के १०० मीलों में ११४ झाल बनाने पड़े हैं। इसकी एक सुरंग २ मील लम्बी है। डिगान की ओर उतरते समय इस नहर के मार्ग में फिर ५८ झाल बनाने पड़े। ब्रियार और बेरी नहरें नेवर्स के धातु के प्रदेश में बहती हैं। ब्रियार नहर सेन और ल्वायर नदियों से मिला दी गई है। यह ३४ मील लम्बी और साढ़े छः फुट गहरी है। इसके मार्ग में ३६ झाल हैं। इस पर अधिकतर कच्चा लोहा ढोया जाता है। बेरी नहर १६० मील लम्बी है। यह ल्वायर और चेर नदियों से मिली है। इस पर चलने वाली नावों में अक्सर कच्चा लोहा लदा रहता है। नावों को अक्सर खच्चर या घोड़े खींचते हैं।

ल्वायर नदी के मध्य और निचले भाग में भी नहरें

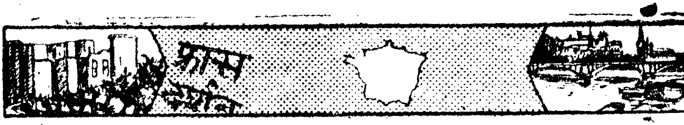
बनानी पड़ी हैं। इन पर प्रति वर्ष सात या आठ लाख टन माल ढोया जाता है।

आर्ल्स से एक नहर रोन नदी को मार्सेल्स से मिलाती है। मीडी नहर टुलूज़ को सेट से मिलाती है। यह नहर केवल ५ फुट गहरी है। यह अधिकतर शराब ढोने के काम आती है। गेरोन नदी की सहायक नदियां नावों के लिये बहुत ही कम उपयोगी हैं। डीर्डोर्न नदी गेरोन के संगम पर बसे हुये लिबोर्न नगर से २५ मील तक नाव चलाने योग्य है। लिबोर्न के नीचे प्रायः शराब और पीपे ढोये जाते हैं।

व्यापार

अपने देश की बनी हुई चीजों को उन्नत करने और बाहरी सस्ते माल के संघर्ष से बचाने के लिये फ्रान्स ने बाहर से आने वाले माल पर तरह तरह के कर लगा दिये गये हैं। कुछ चीजों पर भार के अनुसार और कुछ चीजों पर उनके मूल्य के अनुसार कर लगे हैं। कई चीजों पर ३० फी सदी से अधिक कर लगा है। कर लगाने वाली बाहरी वस्तुओं की संख्या छः सात हज़ार है।

फ्रान्स का व्यापार बड़ा ही संगठित है। अधिकतर वस्तुओं की बिक्री कुछ कम्पनियों के हाथ में है। उनकी शाखायें देश भर में फैली हुई हैं। बैंक उन्हें धन से सहायता देते हैं। बड़े बड़े बैंकों के प्रधान कार्यालय पेरिस में हैं। उनकी १३०० से ऊपर शाखायें देश भर के दूसरे नगरों में स्थित हैं। तीन जहाजी कम्पनियां फ्रांस के समस्त व्यापारी जहाजों का नियन्त्रण करती हैं। इसी प्रकार तीन चार मोटर कम्पनियां फ्रांस के छः सात लाख व्यापारी मोटरों और मोटर लारियों का संचालन करती हैं। तेल, रसायनिक पदार्थ, धातु का सामान, इंजीनियरी का सामान, कपड़ा, जूता, मोज़ा, खाने पीने की चीज़ों की बिक्री का प्रबन्ध भी अधिकतर बड़ी बड़ी फर्मों (दुकानों) के हाथ में है। होटलों का प्रबन्ध भी संगठित रूप से होता है। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बाद संसार भर में विदेशी व्यापार को महत्ता की दृष्टि से चौथा स्थान है। फ्राँस में बाहर से अधिकतर कोयला कोक; मिट्टी का तेल, रबर, तिलहन, लकड़ी, कागज़ की लुब्दी, तांबा, जस्ता, टीन, फास्फेट, शोरा, चावल, शराब गरम देशों



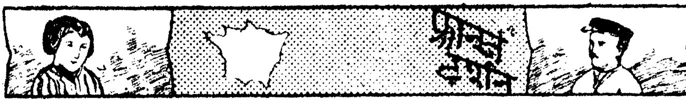
के फल, कहवा, काकोआ और चाय आदि सामान बाहर से आता है।

फ्रांस अधिकतर पक्का (बना हुआ) माल बाहर भेजता है। इनमें ऊनी, सूती और रेशमी तथा कृत्रिम रेशमी कपड़ा धातु की बनी हुई चीज़ें, इंजीनियरी का सामान, चमड़े का बना हुआ सामान, रसायनिक पदार्थ, काग़ज़, सुगन्धित पदार्थ, शराब ब्रैंडी, फल, बीज, चुकन्दर की शक्कर आदि सामान प्रधान हैं।

फ्रांस की वस्तुओं के प्रधान खरीदार ब्रिटेन, बेल्जियम, लक्सेमबर्ग, जर्मनी, अल्जीरिया, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, स्विज़रलैंड, इटली, स्पेन, हालैंड, अर्जेण्टाइन, इण्डोचीन और मरक्को हैं। ट्यूनिस, ब्रेज़ील, कनाडा, पश्चिमी अफ्रीका और हिन्दुस्तान में भी कुछ सामान आता है। फ्रांस से ४५,६८,१०,००,००० फ्रैंक का सामान बाहर जाता है और ३०,३८,६०,००,००० फ्रैंक का सामान बाहर से आता है। एक फ्रैंक लगभग १० आने के बराबर होता है। एक अँग्रेज़ी पौंड में २५ फ्रैंक होते हैं। एक फ्रैङ्क में १०० सेंटाइम होते हैं।

जन संख्या

फ्रांस की जन संख्या लगभग सवा चार करोड़ है जो अपने संयुक्त प्रान्त से कुछ कम है। फ्राँस में प्रायः ५६ फी सदी लोग गांवों में और ४४ फी सदी लोग शहरों में रहते हैं। ९ शहर ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक की जन संख्या २ लाख से अधिक है। एक लाख से अधिक जन संख्या वाले शहर १८ हैं। फ्रांस में जन संख्या की सघनता प्रति वर्गमील में १९२ है। सब भागों की जन संख्या की सघनता समान नहीं है। अच्छी खेती और कारबारी प्रदेशों में अधिक लोग रहते हैं। सबसे अधिक लोग कृषि और बन के काम में लगे हैं। इनके बाद कारबार, खान खोदने, मोटर हांकने, मछली मारने और फौज़ आदि की नौकरी करने में लोग लगे हैं। फ्रान्स में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है। जन संख्या बहुत ही धीमी चाल से बढ़ती है। कुछ वृद्धि पड़ोसी देशों के लोगों के आ जाने से हुई है। फ्रान्स में ७ फी सदी से अधिक जन संख्या विदेशी है। इसमें ८ लाख इटेलियन, ५ लाख बेल्जियन,



४ लाख ३० हज़ार स्पेन वाले, ३१ लाख पोल, डेढ़ लाख स्विस, १ लाख रूसी, ८० हज़ार ब्रिटिश ६० हज़ार जर्मन, ५०००० संयुक्त राष्ट्र अमरीका वासी और ४०००० स्लोवैक हैं।

लैटिन लोगों में फ्रान्सीसी लोग सबसे अधिक उन्नत हैं। फ्रांसीसी लोग क़द में कुछ ऊँचे होते हैं इनका सिर लम्बा बाल भूरे रंग गोरा और आंखें नीली होती हैं। लेकिन आवन प्रोवेन्स गस्कोनी आदि दक्षिणी भागों के निवासियों का क़द कुछ नाटा सिर चौड़ा आँखें भूरी या काली और बाल काले होते हैं। बड़े बड़े शहरों के लोग एक दूसरे से हिलमिल गये हैं। वे दूर दूर भागों में रहने वाले, बास्क, नार्मन, ब्रेटन और बर्गीण्डियन लोगों में बड़ा अन्तर है। सामूहिक रूप से फ्रान्सीसी लोग स्वतंत्रता प्रेमी, शिक्षित, श्रेष्ट और भोग-विलास की ओर झुकने वाले हैं।

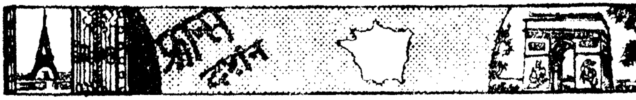
फ्रान्स के अधिकतर लोग रोमन केथलिक हैं। लगभग १२ लाख प्राटस्टेण्ट हैं। कुछ यहूदी और थोड़े से उत्तरी अफ्रीका से आये हुये मुसलमान हैं।

शासन प्रबन्ध

फ्रांस एक प्रजातन्त्र राष्ट्र है। राष्ट्रपति ७ वर्ष के लिये चुना जाता है। यहाँ की पार्ल्यामेण्ट राष्ट्रीय सभा में दो मण्डल होते हैं। वे सीनेट और चेम्बर ड्रेस डिप्यूटीज कहलाते हैं। दोनों का एक नाम कांग्रेस या राष्ट्र सभा है। सीनेट बड़ा मण्डल गिना जाता है। इसमें ३१४ सदस्य होते हैं। चेम्बर डेस डिप्यूटीज़ (प्रतिनिधियों की सभा) में ६१४ सदस्य होते हैं। फ्रांसीसी सभा में रेडिकल, डेमोक्रैट, साम्यवादी, कम्यूनिस्ट आदि कई दल होते हैं।

जिन दलों के १४ तक सदस्य होते हैं उन्हें समितियाँ बनाने का अधिकार होता है।

शासन-प्रबन्ध के लिये सारा फ्रांस ८६ डिपार्टमेण्टों (ज़िलों) में बटा हुआ है। डिपार्ट में प्रीफेक्ट सब से बड़ा पदाधिकारी होता है। डिपार्टमेन्ट भी एरोंडिसमेंट में बटे हुये हैं। एरोंडिसमेन्ट का सबसे बड़ा पदाधिकारी उप प्रीफेक्ट होता है। डिपार्टमेण्ट के अन्तर्गत जो कम्यून होते हैं उनका सबसे बड़ा पदाधिकारी मेअर होता है।



डिपार्टमेन्टों के नाम नदी, पहाड़ आदि के अनुसार है जैसे सेन-एट-मार्न, इण्डर-एट-ल्वायर, बासेज-अलपस, हाटस-पिरेनीज़ इत्यादि। चुनाव में मत देने के लिये सभी बालिग स्त्री-पुरुषों को अधिकार मिला हुआ है। सैनिक और सेवा अनिवार्य है। इसी से फ्रांस में एक बड़ी स्थल सेना और जल सेना रही है।

लेकिन १९४० में जर्मनी से हार जाने के बाद फ्रांस के शासन और सैनिक सङ्गठन में बड़ा अन्तर पड़ गया है। इस समय वहां का संगठन कुछ कुछ जर्मनी के अनुसार है।

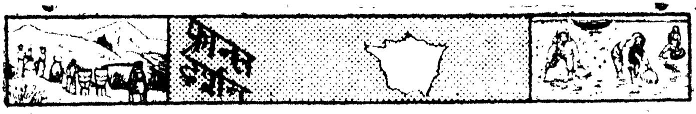
फ्रांसीसी साम्राज्य

इस समय फ्रांस के अधिकार में कुछ ऐसे द्वीप और स्थान बच गये हैं जहां अठारहवीं शताब्दी के पहले फ्रान्स का और भी अधिक राज्य था। इन बचे हुये भागों में कनाडा के तट पर सेंट पियर (Pierne) और मिकेलन द्वीपसमूह में मार्टिनीक, ग्वाडेलोव आदि हैं। दक्षिणी अमरीका में फ्रान्सीसी गायना और भारतवर्ष में

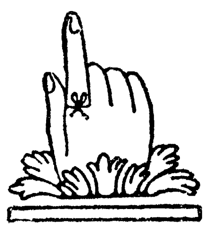
पाण्डिचेरी, चन्द्रनगर, कारीकल और माही स्थान हैं। हिन्द महासागर में रि यूनियन द्वीप है। अमरीका के उपनिवेशों के प्रतिनिधि फ्रांसीसी सेनेट और चेम्बर आफ डिप्यूटीज़ के सदस्य होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मार्गों में फ्रान्स के ये स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

टेहिटी पर १८४१ के बाद और न्यूकेलिडोनिया पर १८५४ में फ्रांस का अधिकार हुआ। न्यूहेब्रेडीज़ पर फ्रांस और ब्रिटेन का सम्मिलित अधिकार है।

फ्रांस का सबसे बड़ा साम्राज्य अफ्रीका में है। उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस ने पहले अफ्रीका के अल्जीरिया और ट्यूनिस पर अधिकार किया और फिर वहां से दूसरे भागों में अपना अधिकार जमाया। उत्तरी अफ्रीका में अल्जीरिया और ट्यूनिस के बाद फ्रांस ने मरक्को पर अपना अधिकार कर लिया। फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका में सेनेगाल, गिनी, आइवरी कोस्ट, डाहोमी और नाइजर शामिल हैं। फ्रांसीसी विषुवत् रेखा प्रदेश कांगो नदी से चाड झील और नील के प्रवाह प्रदेश तक फैला हुआ है। अफ्रीका का सबसे बड़ा



द्वीप मेडेगास्कर द्वीप पूर्व की ओर मुजम्बीक चेनल के पास है। लाल सागर के पड़ोस में जीबूटी और फ्रांसीसी सुमालीलैंड पर फ्रांस का अधिकार है। एशिया में फ्रांसीसी इण्डोचीन और चीन के कुछ स्थानों पर फ्रांस का अधिकार था। इनके अतिरिक्त पिछली बड़ी लड़ाई के बाद फ्रांस को वेगो, केमरून (अफ्रीका में) और सिरिया पर लीग की ओर से शासन करने का अधिकार मिल गया।

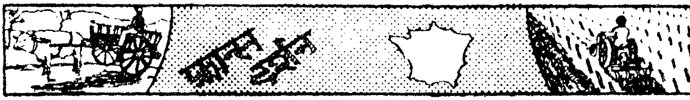


संक्षिप्त इतिहास

फ्रांस के अति प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। प्राचीन समय में फोनिशियन व्यापारी फ्रान्स के लोगों के साथ व्यापार करते थे। ईसा से ६०० वर्ष पूर्व यूनानी लोगों ने सिरिया से आकर फ्रांस का मार्सें नगर बसाया था। उस समय भी अलग अलग फिरके रहते थे। यूनानी (ग्रीक) लोग इन्हें केल्टोई या केल्ट नाम से पुकारते थे। इनके बाल बड़े सुन्दर होते थे। वे बड़े ऊँचे कद के और बलवान होते थे। भिन्न फिरकों के लोग आपस में एक दूसरे से लड़ा करते थे।

दुर्भाग्य से एक बार अल्प्स की ओर से आने वाले पहाड़ी फिरकों ने मार्सेल्स के लोगों को बहुत दबाया। इन लोगों ने रोमन लोगों से सहायता मांगी। रोमन लोग सहायता देने के लिये यहां आये लेकिन वे यहीं ठहर भी गये। नये देशों में सहायता पहुँचाने के बहाने जाकर रोमन लोग बहुधा राज्य करने के लिये ठहर जाते थे।

रोमन लोगों के लिये भी यहां के जंगली फिरकों का जीतना आसान न था। ईसा से ५१ वर्ष पूर्व जूलियस सीज़र पूरी तयारी के साथ रोम से इन लोगों को जीतने के लिये आया। इन लोगों पर स्थाई



विजय पाने के लिये रोमन लोगों ने चौड़ी सड़कें मज़बूत पुल और किले बनवाये। रोमन लोग इन फिरकों को गाल नाम से पुकारते थे। इसी से रोमन काल में फ्राँस देश गाल कहलाने लगा।

रोमन विजय के बाद गाल लोगों ने भी अपना रहन-सहन रोमन लोगों के अनुसार बना लिया। उन्हों ने रोमन लोगों से अच्छी खेती करना, मलमल और रेशम के कपड़े बुनना अस्त्र-शस्त्र बनाना और युद्ध करना भी सीख लिया। गाल लोगों का शासन रोमन नियमों के अनुसार होता था। गाल लोगों ने अपने मन्दिर, महल, नाटयशाला, पुस्तकालय और विद्यालय बना लिये। जहां रोमन काल में बृहस्पति मन्दिर था वहां उसी स्थान पर इस समय पेरिस का प्रसिद्ध नाटरडम गिरजा है। सेन नदी के एक द्वीप पर उस समय लुटे-टिया (कच्ची मिट्टी का गांव) नाम का एक गांव था। यहां पेरिसियाई नाम का फिरका रहता था। इसी से ५०८ ई० में पेरिस नगर बन गया। रोमन साम्राज्य के निर्बल होने पर निचली राइन और वेज़र के किनारे बसे हुये फ्रैङ्क लोगों ने उत्तर की ओर से अपने आक्रमण

आरम्भ कर दिये। इसी समय रोमन साम्राज्य पर अत्याचारी एटिला और उसके हूण अनुयायी हमला कर रहे थे। हूणों से तो गाल की रक्षा हो गई लेकिन फ्रैङ्क लोग अधिकाधिक संख्या में गाल में आते ही रहे। अपने नेता क्लोविस की अध्यक्षता में फ्रैंक लोगों ने ५११ ई० तक उत्तरी गाल पर अपना अधिकार कर लिया। फ्रैंक लोग पहले खेती करने के लिये सोम घाटी में नई भूमि की खोज में आये थे लेकिन जब उनके नेता क्वोविस ने सोइसन की लड़ाई में रोमन गवर्नर को हरा दिया तो पेरिस और सेन घाटी पर उनका अधिकार हो गया। क्वोविस ने देखा बिना पादरियों की सहायता के उसका राज्य गाल में नहीं जम सकता। उसकी स्त्री इसाइन थी ही वह ईसाई हो गया। उसके अनुयाई भी ईसाई धर्म मानने लगे। इसके बाद उसकी विजयों ने धर्म युद्ध का रूप धारण कर लिया।५०० ई० में डिज़ान की विजय से सारा बर्गण्डी क्लोविस के अधिकार में आ गया। ५०७ में वोइले की विजय से गेरोन की घाटी में उसका अधिकार हो गया। उसने विज़ीगोथ लोगों को स्पेन में भगा दिया। इस प्रकार गाल के अधिकतर

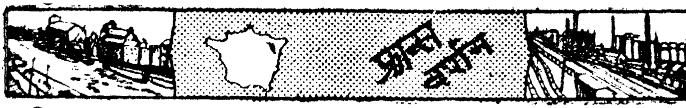
भाग में क्लोविस का अधिकार हो गया। क्लोविस के बाद उसके मेरोवेजियन वंश में कोई योग्य राजा न हुआ। फिर भी यहां के राजा चार्ल्स मार्टेल ने ७३२ ई० में आक्रमणकारी मूर-मुसलमानों को हरा कर फ्रान्स से भगा दिया। इस वंश में चार्लमेन विख्यात राजा हुआ। ७६८ ई० में वह गद्दी पर बैठा। सास्सेनों (अरबी या मूर मुसलमानों) को भगाता हुआ वह पिरेनीज़ पर्वत के उस पार उत्तरी स्पेन में पहुँचा। जब उसकी एक विजयी सेना एक तंग दर्रे में होकर लौट रही थी तो बास्क और गास्कन लोगों ने जो ईसाई नहीं थे उसे काट डाला। इनसे उसने बड़ी निर्दयता से बदला लिया। बड़ी धूम धाम से ८०० ई० में होली रोमन साम्राज्य का वह रोम में सम्राट बनाया गया।

चार्लमेन पक्का जर्मन था। ईसाई धर्म के फैलाने में उसने पूरा प्रयत्न किया। उसने ईसाई पादरियों को बहुत दान दिया। रोमन नमूने के अनुसार उसने शासन में सुधार किये। चार्ल्मेन अधिकतर एक्सला चेपेल में रहता था। यहां के गरम चश्मों में तैरने में उसे बड़ा

आनन्द आता था। ८१४ में ७२ वर्ष की उम्र में जब उसकी मृत्यु हुई तब यहीं उसकी कब्र बनी।

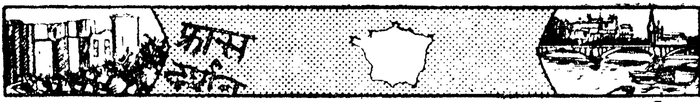
चार्लमेन की मृत्यु के बाद उसका साम्राज्य तीन भागों में बँट गया। पश्चिमी भाग फ्रान्स का राज्य कहलाता था। लेकिन राजा की दुर्बलता से यहाँ के जागीरदार बड़े प्रबल हो गये। गिरजे की जागीरें भी राजा के अंकुश से अलग हो गईं। होते होते राजा के हाथ में कुछ भी शक्ति न रह गई। वास्तविक शक्ति स्थानीय धार्मिक जागीरों और अन्य जागीरदारों के हाथ में चली गई। इसी गड़बड़ी के समय में उत्तर से आने वाले वाइकिंग लुटेरों ने फ्रान्स पर आक्रमण किये। वे नार्वे में नार्सम्यन अथवा नार्मन कहलाते उनकी लूट मार को बचाने और उन्हें ईसाई बनाने के लिये फ्रान्स के राजा ने उन्हें फ्रान्स का एक भाग दिया जिस भाग में वे ठहरे वह नार्मण्डी कहलाने लगा।

एक सौ वर्ष के सुस्ती के बाद छठवें लूई ने (जो मोटा कहलाता था) राजा की शक्ति को फिर बढ़ाया। ३४ वर्ष की लड़ाइयों में उसने जागीरी लुटेरों को साफ कर दिया। उसी ने पेरिस से आर्लियन्स तक राजमार्ग



बनवाया। उसके उत्तराधिकारी सप्तम लूई ने उसके कार्य को उलट दिया। जागीरदारों की सत्ता बढ़ गई। इसके बाद फिलिप अगस्टस ने अपने शासन काल (११८० से १२२३ तक) में कुछ दशा सुधारी। वह जागीरदारों का कट्टर विरोधी था। वहित पादरियों के प्रभुत्व को भी पसन्द नहीं करता था। जागीरदारों को एक दूसरे से लड़ा कर उसने उन्हें निर्बल कर दिया। आठवें और नवें लूई के समयों में देश की दशा कुछ और सुधरी। फ्रान्स के ईसाई राजा मुसलमानों से लड़ने के लिये सिरिया पेलेस्टाइन और मिस्र के धर्म युद्ध में जाने लगे। लेकिन फ्रान्स में गड़बड़ी और निर्बलता के समय इंगलैंड के राजा फ्रान्स में हस्तक्षेप करने लगे थे। फिलिप साहसी (१२७०-१२८५), फिलिप फेअर (१२८५-१३१४) और उसके लड़कों के समय (१३१४-१३२८) में क्रूसेड (ईसाई-मुसलमानों के धार्मिक युद्धों) में फ्रांस की दशा और भी बिगड़ गई। जागीरदार निर्बल हो गये और साधारण प्रजा एक प्रकार से पिस गई। फ्रांस की इसी शोचनीय अवस्था में इंगलैंड से शतवर्षीय (सौ साला) युद्ध छिड़ गया जो बीच बीच के क्षणिक

शान्ति को छोड़कर १३३७ ई० से १४५३ ई० तक चलता रहा। इस लम्बे युद्ध में अँग्रेज़ों ने फ्रांस में जो अत्याचार किये उससे सारे फ्रांस में त्राहि-त्राहि मच गई। अपनी तलवार के ज़ोर से अँग्रेज़ों ने उत्तरी फ्रांस जीत लिया था वे दक्षिणी फ्रांस को जीतने के लिये आगे बढ़ रहे थे। दक्षिणी फ्रांस में पहुँचने के लिये आर्लियन्स शहर पर अधिकार करना आवश्यक था इस लिये १४२८ ई० में उन्होंने इस शहर का घेरा डाल दिया। फ्रांसीसियों में निराशा छा गई थी। उनका नवयुवक डाफिन या युवराज जिसका राज्याभिषेक भी नहीं हो पाया था सेना का नेता बनने में हिचकिचा रहा था। आत्म समर्पण करने के सिवा आर्लियन्स वासियों के सामने और कोई चारा न था। ठीक इसी समय जोन आफ आर्क नाम की एक कन्या नई आशा की झलक लेकर यहां आई। जोन आफ आर्क एक किसान की लड़की थी वह उत्तरी फ्रांस के लारेन प्रान्त में डाम्रेमी गांव की रहने वाली थी। उसने अपने माता-पिता से फ्रांस के दुःखों की दारुण कहानी सुन रक्खी थी। एक दिन जब वह पहाड़ी पर



बैठी हुई भेड़ें चरा रही थी। उसे कुछ दैवी शब्द सुनाई दिया। उसे विश्वास हो गया कि वह अभागे फ्रांस की रक्षा कर सकती है और न्यू आर्लियन्स के लोगों को अँग्रेज़ों के पंजे से छुड़ा सकती है। ईश्वर की इच्छा थी कि वह अँग्रेज़ों को फ्रांस से मार भगावे और फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व ग्रहण करे।

कुछ लोग बेचारी जोन की बातों पर हँसते थे कुछ उसे पागल समझते थे। लेकिन वह अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर अपने चाचा की सहायता से दक्षिणी फ्रांस में डाफिन (युवराज) के दरबार में पहुंच गई। इस समय कुमारी जोन की अवस्था केवल १७ वर्ष की थी। वह एक लड़के के कपड़े पहन कर और घोड़े पर सवार होकर ६ सिपाहियों के साथ डाफिन के दरबार में आई। उसने डाफिन को पहले कभी नहीं देखा था। दरबार में इस समय ३०० अमीर दावत उड़ा रहे थे। वह सीधे डाफिन के पास गई और एक घुटना पृथिवी पर टेक कर उसने युवराज से कहा—"मैं ईश्वर की ओर से फ्रांस की रक्षा करने के लिये आई हूँ।" युवराज ने कुमारी की बातें ध्यान से सुनी और अन्त

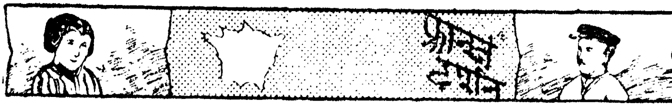
में सिपाहियों की एक टोली कुमारी जोन के साथ अँग्रेज़ों से लड़ने के लिये आर्लियन्स को भेजी जहाँ अँग्रेज़ बड़े ज़ोर का घेरा डाल रहे थे। जोन ने चमकीला सफेद जिरह बख्तर अपने लिये बनवाया था। वह सफेद घोड़े पर सवार थी और हाथ में शुद्ध रेशम का सफेद झंडा लिये हुये थी। फ्रांसीसी सिपाही कुमारी जोन को देख कर खुशी से फूल उठे और एकदम उसके पीछे हो लिये। कुमारी के अनुयायी सिपाही क्षुधा पीड़ित आर्लियन्स वासियों के लिये भोजन सामग्री भी साथ में ले आये थे। आर्लियन्स की ऊँची दीवारों पर से फ्रांसीसी लोग कुमारी को देख कर चिल्लाने लगे कि हमें छुड़ाने के लिये देवी कुमारी आ गई है। जोन को देख कर फ्रांसीसियों में अपूर्व उत्साह भर गया लेकिन अँग्रेज़ी सिपाही भयभीत हो गये। कुछ ही समय में अँग्रेज़ी क़िलेबन्दी की लाइन तोड़ दी गई और भूखे आर्लियन्स वासियों को भोजन दिया गया। इस जीत से अँग्रेज़ों की शान मिट्टी में मिल गई। आर्लियन्स को मुक्त कराने के बाद जोन आर्लियन्स की कुमारी कहलाने लगी। विजय के बाद कुमारी डाफिन से मिलने

गई। डाफिन ने झुक कर कुमारी को प्रणाम किया। कुमारी की इच्छा थी कि डाफिन अपना राज्याभिषेक करवाने के लिये रीम्स नगर में चले। लेकिन और कई युद्धों को बिना जीते रीम्स में पहुँचना असम्भव था। इन सब युद्धों में फ्रांस के शत्रुओं की हार हुई। अन्त में रीम्स में डाफिन का राज्याभिषेक हुआ। वेदी के पास कुमारी सफेद झंडा ऊँचा किये खड़ी थी। अब कुमारी ने कहा मेरा काम पूरा हो गया है। इस लिये मुझे जाने दीजिये। लेकिन राजा ने अपनी निर्बलता और स्वार्थ के कारण कुमारी को न जाने दिया। वह जानता था कि फ्रांसीसी सिपाही निर्भीक होकर कुमारी के पीछे पीछे कहीं भी जा सकते हैं।

कुमारी का अन्तिम काल बड़ा हृदय विदारक हुआ। इतनी विजयों के बाद भी कुछ स्वार्थी फ्रांसीसी फ्रांस में ही अँग्रेज़ों की ओर से लड़ रहे थे। एक दिन कुमारी जोन इन्हीं स्वार्थी फ्रांसीसियों के हाथ पड़ गई। इन्होंने ४००० पौंड लेकर कुमारी को अँग्रेज़ों के हाथ बेच दिया। अँग्रेज़ों ने कुमारी पर चुड़ैल होने का अपराध लगाया। इसी अपराध में दोषी ठहरा कर अँग्रेज़ों ने १४३१ में

फ्रांस के रूआं नगर में कुमारी जोन को जीवित ही जला कर । मार डाला । कुमारी की अमानुषी हत्या के बाद सारे फ्रांस में हाहाकार मच गया । देश द्रोहियों की भी आँखें खुल गईं । धीरे धीरे सारा फ्रांस अंग्रेज़ों से मुक्त कर लिया गया । १४५३ ई० में केवल केले का बन्दर-गाह अँग्रेज़ों के हाथ में शेष रह गया था ।

ग्यारहवें लूई के शासनकाल (१४६१-८३) में जागीरदारी के पुराने झगड़े फिर उठ खड़े हुये । राजा बात बात में अमीरों को फांसी का दंड दे डालता और उनकी जागीरें ज़ब्त कर लेता था । देश में एकता स्थापित करने के लिये विदेश (इटली) में आक्रमण किया गया । लेकिन इससे फ्रांस को कोई स्थायी लाभ न हुआ । फ्रांस के आठवें चार्ल्स के समय (१४८३-६८) में कुछ जागीरदारों को उनकी भूमि लौटा दी गई । बारहवें लूई के शासनकाल (१४६८-१५१५) में मिला लिये गये । फ्रांसिस प्रथम के समय (१५१५-१५४७) में जर्मनी के सम्राट मेक्सीमिलियन का १५१६ में देहान्त हो गया । इस राज्य के लिये फ्रांस और स्पेन के राजाओं में शत्रुता छिड़ गई । अन्त में यह राज्य



स्पेन को मिला। फ्रेंसिस प्रथम के मरने पर हेनरी द्वितीय ने १५४७ से १५५६ तक फ्रांस में राज्य किया। फ्रेंसिस के समय से धर्म सम्बन्धी गृह कलह फ्रान्स में आरम्भ हो गई थी। प्राटेस्टेंट (ह्यूगमार) लोगों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं होता था। हेनरी द्वितीय (१५४७-५६) ने कुछ उदारता दिखलाई। हेनरी तृतीय (१५७४-८६) के। समय में धर्म सम्बन्धी गृह कलह ने उग्र रूप धारण कर लिया। नवारे का हेनरी प्राटेस्टेण्ट लोगों का नेता बना। वही आगे चलकर बर्बन वंश का संस्थापक और हेनरी चतुर्थ नाम से फ्रांस का राजा हुआ। उसके शासनकाल (१५८६-१६१६) में १५६८ में नान्ते का एडिक्ट (नियम) घोषित किया गया। इससे प्राटेस्टेण्ट लोगों को बहुत कुछ धार्मिक स्वाधीनता मिल गई। तेरहवें लूई (१६१०-४३) के समय में राजसिंहासन फिर डांवाडोल होने लगा। कुछ साधारण राजाओं के बाद १६६१ में चौदहवां लूई फ्रान्स के राजसिंहासन पर बैठा। उसने १७१५ तक निरंकुश राज्य किया। प्रजा को कोई अधिकार न रहा। लूई को कई लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। उसने नेदरलैंड पर

अपना अधिकार जमाना चाहा। स्पेन का राज्य था। इस कारण स्पेन से युद्ध छिड़ गया। वह इंगलैंड, हालैंड, आस्ट्रेलिया और कई जर्मन राज्यों से लड़ा। इन कई लड़ाइयों में इतना खर्च हुआ कि उसे देश में कर बहुत अधिक बढ़ाने पड़े। इस समय प्राटेस्टेएट लोग बड़े धनी थे। राज्य में नौकरी न मिलने के कारण वे कला-कौशल और व्यापार में लग गये। कुछ ही समय में वे बड़े धनी हो गये। चौदहवें लूई उनसे धन लेने की इच्छा से ह्यूगनाट (प्राटेस्टेएट) लोगों की वहां धार्मिक स्वाधीनता छीन ली जो उन्हें नान्ते की घोषणा के अनुसार मिली हुई थी इससे वे फ्रांस को छोड़कर अमरीका, इँगलैंड को चले गये जिससे अन्त में फ्रांस के कारबार और व्यापार को बड़ा धक्का पहुंचा। कुछ समय की अराजकता के बाद पन्द्रहवें लूई ने १७४३ से १७७४ तक राज्य किया। लेकिन इस समय फ्रांस में बड़ा आर्थिक संकट था। लोगों में असन्तोष था इसी अवसर से लाभ उठा कर १७५५ ई० में इँगलैंड ने फ्रान्स पर आक्रमण कर दिया। फ्रांस और इँगलैंड की सन्धि तो हो गई लेकिन फ्रांस के अधिकतर उपनिवेश छिन गये। भारत

वर्ष में भी साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न फ्रांसीसी कम्पनी को छोड़ना पड़ा। फ्रांस की आर्थिक दशा और भी अधिक बिगड़ गई।

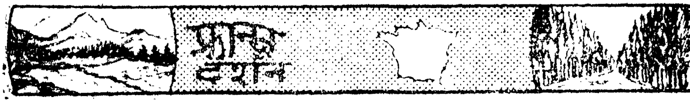
निर्धन लोग पीसे जाने लगे। साधारण लोगों को कोई अधिकार ही न रहा। फिर भी फ्रांसीसी लोग अँग्रेज़ों से जले हुये थे। जब संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा की तो फ्रांस से स्वाधीनता के लिये लड़ने वाले अमरीकनों को इँगलैंड के विरुद्ध कई प्रकार की सहायता दी।

जब १७७४ में सोलहवां लूई फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा तो भी उसके शासन के अन्त (१७९२) तक फ्रान्स की दशा बिगड़ती ही गई। अन्त में फ्रांस के लोगों ने तंग होकर १७८९ में क्रान्ति मचा दी।

फ्रांस के नेपोलियन अपने राजा और रानी को मार कर फ्रांसीसी लोगों ने अपने देश में प्रजातंत्र राज्य घोषित कर दिया।

इस घटना से योरुप के दूसरे राजा भयभीत हो गये। वे डरने लगे कि फ्राँस की क्रान्ति का असर कहीं उनके देश पर भी न पड़े और उनकी पीड़ित प्रजा भी

कहीं प्रजातंत्र के लिये तयारी न करने लगे। इसलिये ब्रिटेन, जर्मन, आष्ट्रिया आदि देशों ने फ्रांस पर चढ़ाई कर दी। फ्रान्स के नये प्रजातंत्र राज्य में अभी शक्ति नहीं आ पाई थी। फिर भी अपने प्रजातंत्र की रक्षा के लिये फ्रान्स में एक छोटी सी सेना तयार की। इस सेना का सेनापति नेपोलियन बोना पार्ट था। नेपोलियन बोना पार्ट कोर्सिका द्वीप में पैदा हुआ था। उसे आरम्भ से ही उसकी माता ने देश-प्रेम का पाठ पढ़ाया था। सेनापति होने पर उसने अपना पूरा पराक्रम दिखलाया। १७९६ ई० में बोना पार्ट आस्ट्रियन सेना से लड़ने के लिये इटली भेजा गया। उस समय आस्ट्रिया योरुप का एक बड़ा शक्तिशाली राज्य था। उत्तरी इटली पर आस्ट्रिया का ही राज्य था। नेपोलियन की अवस्था केवल २६ बर्ष की थी। आस्ट्रिया की बड़ी बड़ी सेनाओं का संचालन अनुभवी सैनिक कर रहे थे। लेकिन नेपोलियन ने उन्हें १८ भिन्न-भिन्न लड़ाइयों में हराया और एक वर्ष में उत्तरी इटली पर फ्रांस का अधिकार हो गया। इस नवयुवक सेनापति की विजयों से सारा संसार चकित हो गया। ब्रिटेन को छोड़ कर



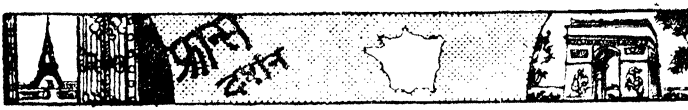
योरुप के सभी राजाओं ने फ्रांस से सन्धि कर ली।

फ्रांस का शासन इस समय वहां के चुने हुये डाइरेक्टरों के हाथ में था। इन्होंने नेपोलियन से प्रार्थना की कि वह ब्रिटेन पर चढ़ाई करे। लेकिन ब्रिटेन का जहाजी बेड़ा बड़ा बलवान था इसलिये ब्रिटेन की शक्ति को तोड़ने के लिये नेपोलियन ने मिस्र देश पर अपना अधिकार कर लिया। पिरेमिड के युद्ध में फ्रांसीसी सिपाहियों ने तुर्कों को बड़ी आसानी से हरा दिया। लेकिन ब्रिटिश जल सेना नायक ने सिकन्दरिया के फ्रांस के उन सब जहाजों को नष्ट कर दिया जिन पर चढ़ कर फ्रांसीसी सेना मिश्र देश में उतरी थी। ऐसी दशा में नेपोलियन फ्रान्स से नई सेना नहीं मँगा सकता था। इसी से नेपोलियन ने दो एक और लड़ाइयों में भी तुर्कों को हराने के बाद फिर अधिक पूर्व की ओर बढ़ने का विचार स्थगित कर दिया। कहा जाता है कि इससे पूर्व नेपोलियन ने हिन्दुस्तान की ओर बढ़ने का भी निश्चय किया था। मैसूर के टीपू सुलतान से पत्र व्यवहार हुआ था। ब्रिटिश बेड़े के सामने नेपोलियन

सिरिया से अपनी फ़्रांसीसी सेना भी साथ नहीं ला सकता था। लेकिन एक रात को नेल्सन के जहाज़ों को बचा कर नेपोलियन एक छोटे से जहाज़ पर चढ़ कर अकेले फ़्रांस लौट आया।

लौटने पर नेपोलियन ने फ़्रांस में तीन कान्सुलों की एक नई सरकार बनाई। वह उनका प्रधान बना। उसकी अनुपस्थिति में आस्ट्रिया ने उत्तरी इटली को जीत लिया था। नेपोलियन ने लौटने पर इटली पर फिर अपना अधिकार कर लिया।

आस्ट्रिया ने फिर सन्धि कर ली। धीरे धीरे योरुप के दूसरे देशों ने भी फ्रांस से सन्धि कर ली। १८०१ ई० तक समस्त योरुप में शान्ति हो गई। १८०४ ई० में नेपोलियन फ़्रांस का सम्राट बन गया। १८०५ में उसने आस्ट्रिया को और १८०६ में प्रूशा (जर्मनी) को जीत लिया। लेकिन इसी बीच में नेल्सन ने ट्राफलगरके युद्ध में फ़्राँसीसी बेड़े को हरा दिया। इससे नेपोलियन इँगलैंड पर चढ़ाई न कर सका। फिर भी नेपोलियन ने योरुप में कई प्रकार के सुधार किये। राइन के किनारे किनारे और अल्प्स के ऊपर होकर भूमध्य-



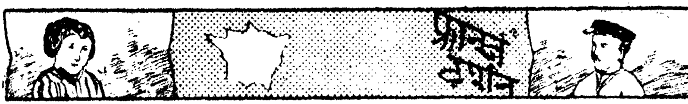
सागर तक अच्छो सड़कें बन गईं। पेरिस में बहुत ही सुन्दर भवन और चौड़ी सड़कें बन गईं। शासन में भी सुधार हुआ।

ब्रिटेन पर चढ़ाई तो न हो सकी लेकिन नेपोलियन ने योरुप के साथ ब्रिटेन का व्यापार बन्द कर दिया। रूस के कुछ बन्दरगाहों में फिर भी ब्रिटेन का माल पहुँचता रहा। इससे रूस और फ्रांस में खटपट हो गई। उधर स्पेन और पुर्चगाल में नेपोलियन के भाई के व्यवहार से वहां की प्रजा बिगड़ खड़ी हुई। ब्रिटेन ने आर्थर बेलेजली की अध्यक्षता में एक बड़ी सेना विद्रोहियों की सहायता के लिये स्पेन में भेज दी। यह वही वेलेजली था जो मरहठों से लड़ने में काफी अनुभव प्राप्त कर चुका था। नेपोलियन ने स्पेन का युद्ध अपने सेनापतियों को सौंप दिया और रूस पर चढ़ाई करने के लिये पांच लाख सिपाहियों की एक विशाल सेना तयार की।

१८१२ में फ्राँसीसी सेना रूस के विशाल मैदान में बढ़ने लगी। रूसी सेनायें पीछे हटती गईं। जब नेपो-लियन मास्को पहुँचा तो उसने नगर को सूना पाया।

रात को रूसियों ने मास्को में आग लगा दी। नगर का बहुत बड़ा भाग जल गया। इस जले हुये काले नगर में फ्रांसीसी सिपाही भूखों मरने लगे। नगर में किसी प्रकार का भोजन न था। कुछ सिपाही घोड़ों का मांस खाकर जान बचाने लगे। भूख से भी अधिक बिकराल रूस का जाड़ा था। अतः शीतकाल में ही विशाल फ्रांसीसी सेना को रूस से लौटना पड़ा। लौटने में सिपाहियों को असीम कष्ट हुये। हज़ारों सिपाही ठंड और भूख से मार्ग में ही मर गये। रूसी कज़ाक सिपाही भाला लेकर इन सिपाहियों पर लगातार चोट करते थे। जब बड़े दिन के अवसर पर नेपोलियन पेरिस पहुंचा तब कई लाख की विशाल फ्रांसीसी सेना में कुछ ही हज़ार अधमरे सिपाही शेष बचे थे। उधर वेलिंगटन स्पेन से फ्रांसीसियों को पीछे हटा कर पिरेनीज़ पर्वत के समीप पहुंच रहा था। फ्रांस के अधीन योरुप के कुछ अन्य देशों में फ्रांस के विरुद्ध विद्रोह उठ खड़ा हुआ था।

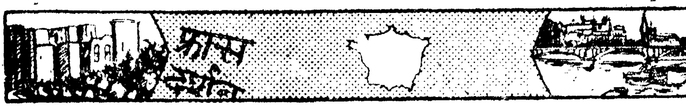
नेपोलियन की अजेय विशाल फ्रांसीसी सेना रूसी हिम के नीचे धराशाई हो चुकी थी। नेपोलियन को नये लड़कों को भरती करके दूसरी सेना तयार करनी



पड़ी। १८१४ में दक्षिण की ओर से ब्रिटेन (वेलिंगटन) पूर्व की ओर से आस्ट्रिया और उत्तर की ओर से जर्मनी ने फ्रांस पर चढ़ाई कर दी। फ्रांसीसी सैनिकों ने नेपोलियन के आदेशों को अक्षरशः पालन करने में सुस्ती की। फल यह हुआ कि फ्रांस के विरोधियों की सेनायें पेरिस पर चढ़ आईं। नेपोलियन अल्बा द्वीप में बन्दी करके भेज दिया गया। मृत राजा का भाई लूई अठारहवां फ्रांस का सम्राट बना। फ्रांसीसी प्रजा लूई से प्रसन्न न थी। जगह जगह उपद्रव हुये इसी समय नेपोलियन एल्बा द्वीप से फ्रांस में भाग आया। लूई ने नेपोलियन को पकड़ने के लिये जो सेना भेजी उसके पास नेपोलियन निहत्था अपने कोट के बटन खोल कर गया। "ऐ लड़को क्या तुम अपने सम्राट पर गोली चलाओगे" इतना सुनते ही सिपाही नेपोलियन की जय ध्वनि करने लगे। जो सिपाही नेपोलियन को बन्दी बनाने भेजे गये थे वे उसे अपना सम्राट बना कर पेरिस ले गये। दूसरी और सेनायें भी अपने प्यारे पुराने सम्राट से आ मिलीं। अठारहवां लूई पेरिस छोड़ कर भाग गया। लेकिन योरुप के दूसरे राजा इस समय अपने

को ईश्वर का अवतार मानते थे। वे कब यह सहन कर सकते थे कि फ्रान्स में जन साधारण का राज्य हो। वे फिर फ्रान्स पर चढ़ आये। सबसे पहले ब्रिटेन और प्रूशा (जर्मनी) की सेनायें नेपोलियन से लड़ने के लिये पहुँची।

नेपोलियन बड़ी शीघ्रता से अपनी नई सेना लेकर उनसे लड़ने गया। वाटर लू स्थान पर ब्रिटिश सेना और फ्रान्सीसी सेना में दिन भर घमासान युद्ध हुआ। अँग्रेज़ी सेना के पैर उखड़ रहे थे इतने में प्रूशा की सेना आ गई। थके हुये फ्रांसीसी सिपाही दो संयुक्त सेनायें का सामना न कर सके। इस हार से फ्रांस में प्रजा-सत्ता के राज्य का अन्त हो गया। इस बार नेपोलियन बन्दी करके दूर स्थित सेण्ट हलीना द्वीप में भेजा गया। यहीं नेपोलियन के जीवन के अन्तिम वर्ष एक अँग्रेज़ी जेल में बड़े कष्ट से बीते। नेपोलियन में अपूर्व आकर्षण शक्ति थी। उसके सिपाही उस पर जान देने के लिये तयार रहते थे। उसकी अद्वितीय सैनिक सूझ के अतिरिक्त उसकी घोषणाओं में अद्भुत ओज रहता था। उसकी

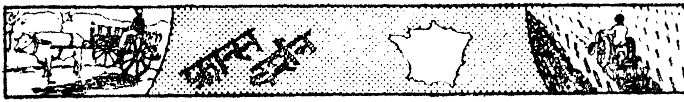


घोषणाओं में असंख्य घोणाओं में से एक घोषणा यहां दी जाती है। जो उसने अल्बा द्वीप से लौटने पर की थी।

"सैनिको ! हम हारे नहीं हैं !

सैनिको ! अपने निर्वास में तुम्हारा शब्द सुना है। प्रत्येक बाधा और संकट में होकर मैं तुम्हारे पास आया। तुम्हारे सेनापति को लोगों ने एक स्वर से फ्रांस के सिंहासन पर बिठाया और तुम्हारे (Bucklers) ने उसे ऊँचा किया। वह तुहारे बीच में है। तुम उसके पास आओ ! जिन झंडों को राष्ट्र ने वहिष्कृत किया और जिनके नीचे फ्रांस के शत्रु पिछले २५ वर्ष से इकट्ठे होते रहे हैं उतार कर फेंक दो। तिरंगा (Cockade) पहन लो। जिन विजय चिन्हों को तुमने उल्म, आस्ट-लिट्ज़न, जोना, फिलाऊ, फ्रीडलैंड, टूडेला, एक मुहल, एसलिंग, वाग्राम, स्मालेन्स्क, मास्कोवा, लुटज़न, बुर्श्चेन, माण्ट मीरेल में लिया वे यहां हैं क्या तुम्हें विश्वास है कि मुट्ठी भर फ्रांसीसी जो आज इतने अभिमानी हो रहे हैं इन्हें संभाल सकेंगे। वे जहां से आये हैं वहीं लौट जायँगे। उन्हें वहीं राज्य करने दो जहां वे १९ वर्ष से राज्य करने का बहाना कर रहे हैं। सिपाहियो ! अपने

नेता के झंडे के नीचे एकत्रित हो जाओ। विजय दौड़ कर आवेगी। राष्ट्रीय विजय-पताका कंगूरों पर चढ़कर नाटरडम के बुर्जों पर फहराने लगेगी। उस समय तुम अपने प्रतिष्ठित घाव दिखला सकोगे। उस समय अपने देश को स्वाधीन कराने वालों की हैसियत से तुम्हें पूरा श्रेय मिलेगा। बुढ़ापे में अपने देशवासियों से प्रतिष्ठित होकर उनके बीच में तुम अपने वीर पराक्रमों को अभिमान के साथ सुना सकोगे "और मैं भी उस विशाल सेना में एक सिपाही था जिसने दो बार वियना, रोम, बर्लिन, मेड्रिट और मास्को में प्रवेश किया और पेरिस से उस दाग को धो डाला जो देश-द्रोह और शत्रु की उपस्थिति ने उस पार डाल दिया था"। १८१५ में वियना की संधि के अनुसार फ्रांस की पुरानी सीमा निश्चित रही। योरुप के जिन देशों को जीत कर नेपोलियन ने फ्रांस में मिला लिया था वे फ्रांस से अलग कर लिये गये। फिर भी राष्ट्रीयता, व्यवस्था और समानता के जिन सिद्धान्तों के लिये फ्रांस में क्रांति हुई थी उन्हीं के अनुसार न केवल फ्रांस वरन् योरुप के दूसरे देशों में भी सरकारों की स्थापना हुई। क्रान्ति से

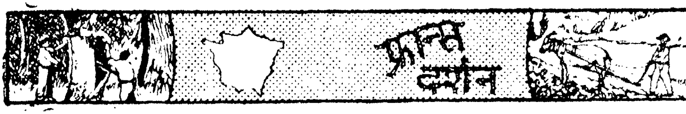


फ्रांस के किसान अपनी भूमि के स्वामी बन गये। सोलहवें लूई की हत्या के बाद इँगलैंड और रूस ने उसके बेटे को सत्रहवां लूई मान लिया था। वह जेल में ही मर गया। इसलिये सोलहवें लूई का भाई अठारहवें लूई के नाम से फ्रान्स की गद्दी पर बैठा।

फ्रान्स के बर्बन राजाओं ने क्रांति से कोई शिक्षा नहीं ली। उनके शासन में कोई सुधार नहीं हुआ। लोगों में घोर असंतोष था। एक दल पहले ही से फ्रांस में प्रजातंत्र स्थापित करने के पक्ष में था। १८३० में अठारहवें लूई का भाई (जो दसवें चार्ल्स के नाम से फ्रांस की गद्दी पर बैठा था) देश से भगा दिया गया। लूई फिलिपी गद्दी पर बैठा। उसने व्यवस्था के अनुसार शासन करना आरम्भ किया। साम्राज्य बढ़ाने के लिये अल्जीरिया में फ्रांसीसी लोग घुस रहे थे। आगे चल कर उसका ढंग बदल गया। १८४८ में फिर विद्रोह हुआ। लूई फिलिप्पी को भागना पड़ा। फ्रांस में एक बार फिर प्रजातंत्र स्थापित हुआ। नेपोलियन का भतीजा लूई नेपोलियन बोना पार्ट राष्ट्रपति चुना गया। १८५२ में वह नेपोलियन तृतीय के नाम से फ्रांस का

सम्राट बन गया। वह नेपोलियन का अनुकरण करके फ्रांस का गौरव बढ़ाना चाहता था। १८७० में उसने जर्मनी से युद्ध छेड़ दिया। इसमें फ्रांस को बुरी तरह हार हुई। फ्रांस को बहुत सा (५ बिलियन फ्रैंक) हरजाना देना पड़ा। फ्राँस का अल्सेस लारेन प्रान्त (४७०० वर्गमील) भी जर्मनी ने मिला लिया। सम्राट अपनी स्त्री और बेटे के साथ इँगलैंड भाग गया। उसके बाद फ्रांस में फिर प्रजातंत्र राज्य स्थापित हुआ जो अब तक चला आ रहा है।

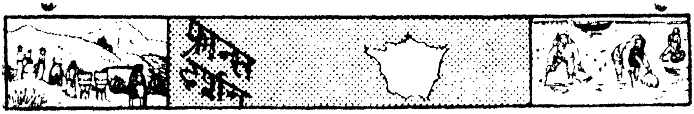
योरुप में शान्ति बने रखने के लिये योरुप के बड़े बड़े राज्य प्रायः समशक्ति वाली दो टोलियों में बट गये। एक ओर जर्मनी, इटली और आस्ट्रिया-हंगारी के राज्य थे। दूसरी ओर फ्रांस, ब्रिटेन और रूस थे। १९१४ में जब बड़ी लड़ाई आरम्भ हुई तब इस लड़ाई ने फ्रांस में बड़ा उग्र रूप धारण कर लिया। जर्मनी अपनी पूरी शक्ति और बड़े वेग से उत्तरी फ्रांस को जीतने के लिये तुला हुआ था। फ्रान्स और उसके मित्र भी सचेत थे। लड़ाई ४ वर्ष तक चली। फ्राँस की भारी क्षति हुई। पर अन्त में विजय फ्राँस और उसके मित्रों के हाथ रही।



युद्ध के समय फ्रांस के कारखानों, बगीचों, खेती और नगरों में जो सर्वनाश हुआ था उसकी पूर्ति के लिये फ्रांस ने हर्जाना मांगा। अल्सेस लारेन प्रान्त फिर फ्रांस को मिल गये। सार घाटी की कोयले की खानों से कोयला निकालने का अधिकार भी १५ वर्ष के लिये फ्रांस को मिल गया।

लड़ाई के बाद भी जर्मनी की ओर से फ्रांस का सन्देह दूर न हुआ। फ्रांस ने एक बड़ी सेना बनी रक्खी। जर्मनी ने पूर्व में स्थित चेकोस्लोवेकिया पोलैंड आदि छोटे देशों को जो जर्मनी से शत्रुता रखते थे पूरी सहायता दी। रोमन केथलिक पादरियों की प्रभुता और व्यक्तिगत सम्पत्ति की प्रधानता होने से रूस और फ्राँस में भी अनबन रही। बोल्शेविक रूस के विरुद्ध पोलैंड को सहायता देने के लिये १९२२ में फ्रांस ने जनरल वेगां को भेजा था इससे पोलैंड और फ्रांस में पक्की मित्रता हो गई। फ्रांस ने बेल्जियम, चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लैबिया, रूमानिया से मित्रता सम्बन्धी सन्धि कर ली। १९२५ ई० में जर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनने के लिये भी फ्रांस राजी हो गया। इटली ने उत्तरी

अफ्रीका के फ्रांसीसी अधिकारों को लेने की बात छेड़ी और जर्मनी से मित्रता कर ली। इससे फ्रांस और इटली में भी वैमनस्य बढ़ गया। जर्मनी ने धीरे धीरे अपनी शक्ति बढ़ा ली। राइन प्रदेश, आस्ट्रिया मिलाने के बाद चेकोस्लोवेकिया पर जर्मनी ने अधिकार कर लिया। फ्रांस और उसके मित्र ब्रिटेन से कुछ न करते बना। पर जब जर्मनी ने पोलैंड पर चढ़ाई कर दी तब फ्रांस और ब्रिटेन ने अगस्त १६३६ में युद्ध घोषित कर दिया। फ्रांस ने अपनी सीमा पर किलेबन्द मेजिनो लाइन बनाई थी। जर्मनी ने अपनी सीमा की रक्षा के लिये सिगफ्रीड लाइन बना ली। लड़ाई के आरम्भ में साधारण सीमा प्रदेश की मुठभेड़ के बाद और कोई युद्ध न हुआ। १६४० की ग्रीष्म ऋतु में पूरे ज़ोर से फ्रांस बेल्जियम और हालैंड पर एक साथ चढ़ाई कर दी। हालैंड और बेल्जियम ने एक सप्ताह में ही हथियार डाल दिये। बेल्जियम के आत्मसमर्पण से फ्रांस की दशा शोचनीय हो गई। अन्त में फ्रांस को भी बाध्य होकर जर्मनी से क्षणिक संधि करनी पड़ी। क्षणिक संधि के अनुसार जर्मनी ने फ्रांस का अधिकतर भाग अपने अधिकार में रक्खा है।

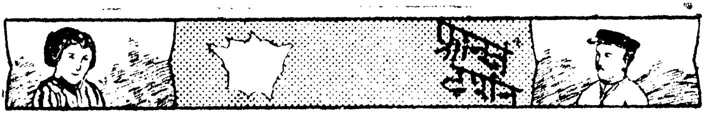


इसी भाग में फ्रांस का समस्त अटलांटिक तट और उत्तर का कारबारी प्रदेश और उपजाऊ प्रदेश है। इसी में फ्रांस की राजधानी पेरिस स्थित है। इसलिये फ्रांस की वर्तमान सरकार ने दक्षिण के आग्नेय पठार में स्थित विची नगर में अपनी अस्थायी राजधानी बनाई है। फ्रांस के भाग्य का निर्णय लड़ाई के अंत में होगा।

फ्रांसीसी किसान

फ्रान्स योरुप का एक कृषि प्रधान देश है। फ्रांस में अनुपात से इतने लोग खेती में नहीं लगे हुये हैं जितने हिन्दुस्तान में लगे हैं। लेकिन फ्रांस के किसान भारतीय किसानों की अपेक्षा कहीं अधिक शिक्षित धनी और समृद्ध हैं। फ्रांसीसी किसान स्वयं अपने खेत का स्वामी है उसके ऊपर कोई ज़मींदार नहीं है। औसत से एक फ्रान्सीसी किसान का खेत १७ एकड़ होता है। लेकिन सब किसानों के खेत बराबर नहीं हैं। किसी किसान का खेत केवल दो या तीन एकड़ होता है। किसी किसान के पास ४० एकड़ खेत होता है। जिन

किसानों के पास बड़ा खेत होता है वे अपने खेत के एक भाग में अंगूर आदि का बगीचा रखते हैं। दूसरे भाग में सुअर, भेड़, बकरी, गाय, बैल और घोड़ा चराने के लिये चरागाह रखते हैं। तीसरे भाग में वे भारतीय किसानों की तरह अन्न की फसलें उगाते हैं। जिन किसानों के पास छोटे खेत होते हैं वे अपने खेत में हल नहीं चलाते हैं। वे अपने खेत को फावड़े से खोदते और गोड़ते हैं। वे अपने खेत की एक इंच भूमि भी नहीं खराब होने देते हैं। फ्रांसीसी किसान बड़ा मेहनती होता है। वह अपने खेत में एक भी जंगली झाड़ी या मैदान नहीं रहने देता है। फ्रांसीसी किसान अपने खेत से वर्ष भर में एक दो और कभी कभी तीन फसलें उगाते हैं। दक्षिण में प्रायः हर एक किसान के पास बादाम, शहतूत, अंजीर और जैतून के पेड़ होते हैं। फ्रांसीसी किसान अपने खेत से इतने मूल्य की फसलें उगाता है कि उसका साल भर का खर्च भलीभांति चल जाता है। फ्रान्सीसी किसानों पर महाजन या ज़मींदार का बोझ नहीं होता है। इसलिये वह रोज़ रोज़ का खर्च पूरा करने के बाद प्रति वर्ष अपनी वृद्धा-



वस्था के लिये कुछ न कुछ बचाता रहता है। किसान को जो बचत होती है उससे वह नई भूमि मोल ले लेता है अथवा अपनी बचत के धन को देहाती बैंक में जमा कर देता है। साल में जिस दिन जमा करने वालों को वार्षिक लाभ की रकम बांटी जाती है उस दिन बैंक के सामने नीला पाजामा पहने हुये मनुष्यों और हाथों कै कते हुये स्त्रियों की भीड़ देखने योग्य होती है। किसान देश की रीढ़ हैं। किसानों की समृद्धि से देश की शक्ति और सम्पत्ति बढ़ती है। अपने खेत पर अपना पूरा अधिकार होने के कारण फ्रांसीसी किसानों ने उसे बहुत ही उपजाऊ और मूल्यवान बना लिया है।

ल्वायर के तट पर

ल्वायर नदी ब्रिटनी के दक्षिण में अपना पानी विस्के की खाड़ी में गिराती है। इसके मुहाने के पास फ्रांस का प्राचीन प्रसिद्ध नगर नान्ते स्थित है। नान्ते नगर फैला हुआ बसा है। इसके पुराने घर किनारे के ऊपर बने हैं। नान्ते नगर फ्रांसीसी इतिहास में प्रसिद्ध

है। १५६८ में फ्राँस के राजा हेनरी ने फ्रांसीसी प्राटेस्टेन्ट लोगों को धार्मिक स्वाधीनता दी थी। १७६३ में यहां लोग राजा के पक्ष में और क्रांन्ति के विरुद्ध हो गये थे। क्रान्तिकारियों ने अपने विरोधियों के हाथ-पाँव बांध कर उन्हें ल्वायर में डुबा दिया था।

जुलाई के महीने में नान्ते के समीप ल्वायर का दृश्य बड़ा सुहावना होता है। किनारों पर सब कहीं फूल फूले होते हैं। कुछ ही महीनों में बाढ़ आने पर दृश्य एकदम बदल जाता है। बाढ़ इतने ज़ोर की आती है कि केवल ऊँचे पेड़ों की चाटियां दिखाई पड़ती हैं। नान्ते की सड़कों पर नावें चलने लगती हैं। जिन द्वीपों पर गर्मियों में लोग सैर करने जाते हैं वे लुप्त हो जाते हैं। लोगों के डूबने पर गिरजा के घंटे बजने लगते हैं। सूचना पाकर सिपाही उन्हें बचाने के लिये नावें ले जाते हैं। नान्ते फ्रांस का लिवरपूल है लेकिन बाढ़ के दिनों में यह वेनिस बन जाता है।

एंकार्स नगर किसी समय में आंजू प्रान्त की राजधानी था। यहीं के एक राजवंश ने कुछ समय तक ब्रिटेन में राज्य किया था। फ्रांस का यह भाग बहुत ही

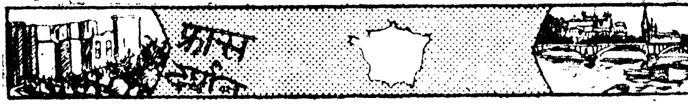
हरा-भरा है। इसको फ्रांस का बगीचा कहते हैं। यहां शायद ही कहीं वीरान जमीन मिले। सब कहीं हरे-भरे अंगूरों और दूसरे फलों के बगीचे, चरागाह या लह-लहाते हुये खेत मिलते हैं। ऐसे ही प्राकृतिक दृश्य में चौड़ी ल्वायर नदी किनारों तक भरी हुई बहती है। इधर के लोग इतने स्वावलम्बी हैं कि उन्हें दूकानों की बहुत कम आवश्यकता पड़ती है। अक्सर घरों में घर की बनी हुई शराब, नारंगी के फूलों का बना हुआ इत्र, फलों के मुरब्बे, अखरोट का तेल, शहद, घर की बनी हुई औषधियां, घर का कता हुआ और बिना हुआ कपड़ा आदि मिलता है। इनके अतिरिक्त पड़ोस के पानी में पकड़ी हुई मछली और स्ट्राबेरी, अंजीर, अंगूर आदि फल और तरकारियां मिलती हैं।

यदि हम नदी के ऊपरी भाग की ओर बढ़ते जावें तो आगे चल कर टोरेन प्रान्त का प्रधान नगर टूर्स मिलता है। टोरेन प्रान्त प्राचीन फ्रांसीसी राजाओं का मध्यवर्ती प्रान्त था। यहां भी सब कहीं अंगूरों और दूसरे फलों के बगीचे और खेत हैं। कहीं भी गरीबी नज़र नहीं आती है।

कहा जाता है कि इसी से टोरेन निवासी अपने प्रान्त को छोड़ कर कहीं जाना पसन्द नहीं करता है। स्त्रियाँ सफेद टोपी लगाती हैं जो धूप में बड़ी भली मालूम होती है।

टूर्स एक बड़ा मनोहर शहर है। इसके घर अंगूरों के बगीचों और नदी के किनारे वाली सड़क पर घूमने में बड़ा आनन्द आता है। सेण्ट सिम्फोरियन नामक बाहरी भाग में पहुंचने के लिये ल्वायर नदी पर पुल बना है। यहां सेण्ट मांटिन और दूसरे पुराने घर बने हैं। इस नगर के पड़ोस में ईसाई सिपाहियों ने मुसलमानी (सार सीनी) सेना को ७३२ ई० में हराया था। इस विजय ने प्रसिद्ध अरबों से योरुप को बचा लिया। युद्ध उस प्रसिद्ध मैदान में हुआ था जो टूर्स के दक्षिण में स्थित है। काली मिट्टी के उपजाऊ मैदान के दूसरे किनारे पर पाइटियर्स नगर एक सपाट पहाड़ी पर स्थित है। पुराने समय में यह एक प्रसिद्ध दुर्ग था। नगर की ज़ीनेदार गलियां देखने में बड़ी भली मालूम होती हैं।

टूर्स से कुछ दूर ल्वायर की सहायक इन्देर नदी पर लोश (Loches) का बन्दी गृह-दुर्ग है। इसकी



कोठरियां बड़ी अँधेरी हैं। पुराने समय में कभी कभी राजनैतिक बन्दी इन्हीं कोठरियों में मार डाले जाते थे। बाहर की ओर छोटे छोटे लोहे के पिंजड़े बने थे जिनमें बन्दी न खड़ा हो सकता था और न लेट सकता था।

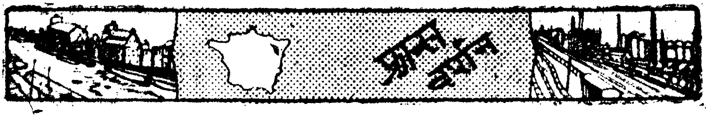
टूर्स के ऊपर ल्वायर नदी ला सोलोन के चौड़े मैदान में होकर बहती है। यहां नदी में कड़ी कीचड़ है। कीचड़ अक्सर नदी के मार्ग को रोक देती है। इससे अक्सर बाढ़ आती है। मैदान को बाढ़ से बचाने के लिये ऊँचे बांध बनाये गये है। नदी से बांध के पीछे बसे हुये गांव दिखाई नहीं देते हैं। बहुत दूर तक नदी बलुआ और दूसरे पत्थर की प्राकृतिक दीवार से घिरी है। इस ओर कहीं वीरान चट्टानें और कहीं अंगूर के बगीचे हैं। लेकिन यहां की गुफायें बड़ी मनोहर हैं।

ब्लोइस के मार्ग में अम्बोइस का आलीशान किला पड़ता है। अम्बोइस का छोटा सफेद नगर ल्वायर के ऊँचे किनारे पर बसा है। इसके घर नदी की ओर झुके हुये से मालूम होते हैं। सोलहवीं शताब्दी में यहां फ्रांस के राजा रहा करते थे। किले के ऊपर से अंगूरों के बगीचों, हरे चरागाहों और लहलहाते हुये खेतों वाला

समीप का मैदान बड़ा भला मालूम होता है। कुछ दूर आगे ब्लोइस का विशाल दुर्ग अम्बोइस से भी अधिक प्रसिद्ध है। यह एक पहाड़ी पर बना है जो नदी के एकदम ऊपर उठ गई है। यहां रोमन शासकों और फ्रांस के इतने राजाओं का निवास रहा कि ब्लोइस का इतिहास वास्तव में फ्रांस का इतिहास है। इसकी प्राचीन वस्तुयें देखने योग्य हैं।

ब्लोइस से कुछ दूर और आगे चेम्बोर्ड के १०० बुर्ज दिखाई देते हैं। यहीं फ्रेंसिस प्रथम ने एक बड़ा सुन्दर महल बनवाया था। कहते हैं उस समय यहां एक काला शिकारी रहता था। वह काले वस्त्र पहन कर और काले घोड़े पर सवार होकर रात में शिकार के लिये जाता था। उसके पीछे काले कुत्ते रहते थे।

आगे बढ़ने पर आर्लियन्स का प्रसिद्ध शहर पड़ता है। यहीं १४२६ ई० में फ्रांस की प्रसिद्ध कुमारी जोन आफआर्क ने अँग्रेज़ों को भगाकर फ्रांस को मुक्त किया था। आर्लियन्स के आगे लासोलोन के विशाल मैदान में ल्वायर नदी मुड़ती है। दक्षिण की ओर वे पहाड़ियां हैं जिनमें ल्वायर नदी का निकास है। बहुत दूर तक



कोई बड़ा नगर नदी के किनारें नहीं मिलता है। लेकिन परिश्रमी किसानों के अंगूरों के बगीचे, चरागाह और खेत बराबर नज़र आते रहते हैं।

नेवर्स के आगे ल्वायर में नावें नहीं चल सकतीं। नदी बहुत संकुचित हो जाती है और उछलती हुई पहाड़ियों के बीच में बहती है। इसके किनारे पर फ्रांस का प्रसिद्ध फौलादी नगर सेण्ट इंटियें है। सेण्ट इंटियें के कारखानों की चिमनियों का धुआं बहुत दूर तक गांवों में पहुँचता है। सेण्ट इटियें के आगे नदी का दृश्य फिर मनोहर हो जाता है। पहाड़ी ढालों पर सिन्दूर और दूसरी तरह के पेड़ हैं।

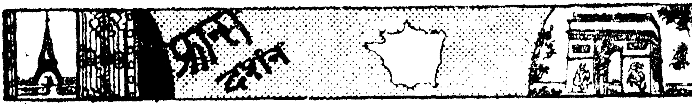
आगे चलकर लेप्वी के सफेद घर अंगूर के बगीचों में छिपे हुये दिखाई देते हैं। लेप्वी से ल्वायर के स्रोत तक जाने में पूरा एक दिन लगता है। यह स्रोत समुद्र तल से ५००० फुट ऊँचा है और नान्ते से ५०० मील दूर है।

नेयर्स के पास ही ल्वायर में एलियर नदी मिलती है। एलियर का मार्ग भी बड़ा मनोहर है। इसी एलियर के किनारे फ्रांस का प्रसिद्ध स्वास्थ्यप्रद विची नगर

स्थित है जहां फ्रांस की वर्तमान सरकार ने पेरिस छोड़ने के बाद अपनी राजधानी बनाई है। इसी के पड़ोस में उबलते हुये गरम पानी के चश्मे हैं। यही फ्रांस का पुराना आवर्न प्रान्त है जहां पुराने समय में विशाल ज्वालामुखी पर्वतों की भरमार थी। इस प्रदेश का प्रधान नगर क्लेरमाण्ट फेराड है। यह आग्नेय प्रदेश के मध्य में स्थित है। यहीं क्रूसेडों की प्रथम सभा १०९५ ई० में हुई थी।

नार्मण्डी

नार्मण्डी में यात्री को सब कहीं चरागाह, जंगल, बगीचे मिलते रहते हैं। छाये हुये घर इन्हीं बगीचों के बीच में बसे हैं। गांव के घरों में गिरजाघर सबसे ऊँचा उठा हुआ दिखाई देता है। नार्मण्डी अपने फलों के बगीचों के लिये सबसे अधिक प्रसिद्ध है। गर्मी के समाप्त होने पर शिशिर ऋतु में फलों के बगीचे आदि सुहावने लगते हैं। यहां फलों में अंगूर के स्थान पर सेव और नाशपाती के पेड़ होते हैं। ये फल इतने लगते



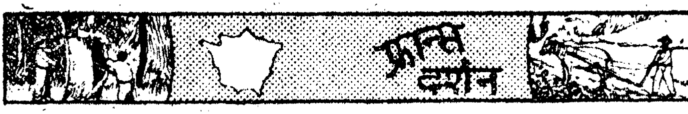
हैं कि इनके बोझ से पेड़ की डालियां झुक जाती हैं। इधर के लोग अंगूरी शराब की जगह सीडर (Cider) का प्रयोग करते हैं।

इधर के लोग अक्सर फलों के बगीचों में राई, जौ और दूसरी फसल उगाते हैं। इस प्रकार एक ही खेत से इधर के किसान एक फसल अन्न की और दूसरी फसल फलों को उगाते हैं। नार्मन किसान बड़ा परिश्रमी होता है वह सूर्योदय से ही काम में लग जाता है। जब पुरुष खेतों में हल चलाते हैं। तब उसी समय स्त्रियां घर पर गाय दुहती, मक्खन निकालती, गोटा बुनतीं, मुर्गियों की देख भाल करती, बतखें हांकतीं और भेड़ें चराती हैं। जब फसल पकती है तब फसल काटने और घास सुखाने के लिये स्त्री-पुरुष दोनों ही बाहर काम करते हैं। फलों के तोड़ने के लिये भी बगीचों में जाकर स्त्रियां पुरुषों का हाथ बटाती हैं।

जब किसान डाल में लम्बी छड़ी मारता है तब सैकड़ों सेब और नाशपाती भदभद लम्बी घास पर गिर पड़ते हैं। पहले ये फल ऊँची ऊँची टोकरियों में भरे जाते हैं फिर वे सीडर-भवन में लाये जाते हैं। कुछ

समय तक वे इसी तरह रक्खे रहते हैं। इसके बाद वे कुचलने और पेरने के लिये एक बड़ी नाद में डाले जाते हैं। इसमें एक बड़ा सफेद घोड़ा जुतता है। फलों का रस नीचे एक पक्के हौज़ में जमा होता रहता है। इस मोठे रस को लोग पीते हैं। इससे किसान को बड़ी आमदनी होती है। शीतकाल आरम्भ होने के पहले ही किसान लोग कुल्हाड़ी लेकर जंगलों में जाते हैं और जलाने और तापने के लिये लकड़ी काटते हैं। लड़के गिरी हुई टहनियों को इकट्ठा करते हैं।

हर एक किसान के घर के पास एक तन्दूर-घर होता है। इसी के सामने लकड़ियों का ढेर इकट्ठा किया जाता है। शीतकाल में इसी घर में बड़ी तन्दूरी रोटी बनाई जाती है। अक्सर महीने में एक बार इतनी रोटी बनाई जाती है कि वे महीने भर के लिये काफी होती है। रोटी बनाने के लिये गेहूँ, मकई और राई (विलायती बाजरा) का आटा मिलाया जाता है। इसमें बहुत ही कम पानी मिलाया जाता है। फिर इसे लकड़ी के यंत्र (त्री) से माड़ते हैं। मड़ जाने पर इसकी बड़ी बड़ी रोटियां तन्दूर (बड़े ढके हुये चूल्हे) में पकाई जाती हैं।



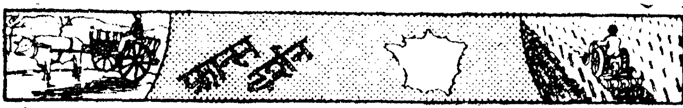
कभी कभी ये रोटियां साइकिल के पहिये के समान बड़ी बनाई जाती हैं। पक जाने पर वे आलमारी में रख ली जाती हैं। कभी कभी ये विशाल मुँदरी के आकार की होती हैं और खूंटियों पर टांग दी जाती हैं। इस रोटी में नमक बिल्कुल नहीं मिलाया जाता। इसलिये कुछ समय में यह रोटी खट्टी और बहुत कड़ी हो जाती है। लेकिन नार्मण्डी के किसान उठते ही इस रोटी का एक एक टुकड़ा खाते हैं और ऊपर से बहुत सा सीडर (सेव का रस) पी लेते हैं। दोपहर के समय यहां के किसान एक तश्तरी भाजी, भीगी हुई रोटी और कुछ खट्टी मलाई (क्रीम) खाते हैं। लेकिन किसान का प्रधान भोजन काम समाप्त होने पर शाम को होता है। इस समय वह तरकारी के साथ मांस, रोटी खाता है और सीडर (सेव का रस) पीता है।

इतवार के दिन यहां के लोग आराम करते हैं और आनन्द से रहते हैं। वे बढ़िया कपड़ा पहन कर गिरजे जाते हैं। कुछ लोग गोटा किनारी के कपड़े पहनते हैं। सभों के पैरों में लकड़ी की पौलियां होती हैं। लड़के दौड़ लगाते हैं और तरह तरह के खेल खेलते हैं।

नौजवान स्त्री-पुरुष इधर उधर घूमते हैं। बुड्ढे लोग मेज़ के पास बैठते हैं जहाँ सोडर के भरे हुये घड़े रक्खे रहते हैं। वहीं पर पीने के लिये प्याले रक्खे रहते हैं।

ब्रिटेनी ब्रिटनी में टूटी फूटी पहाड़ियां, पथरीली चट्टानें जङ्गली फल, छोटे चरागाह और झाड़ियां मिलती हैं। निचले भागों के चरागाहों में छोटी छोटी चितकबरी (सफेद और काली) गाय चरती दिखाई देती हैं। लोगों के बहुत ही छोटे और एकमञ्जिले घर ऊँचे टीलों पर बने हुये हैं। ये छप्पर से छाये हुये होते हैं। इनके पड़ोस में देवदारू के पेड़ होते हैं। पास ही पत्थर की विचित्र हवाई चक्कियाँ रहती हैं। फ्रान्स के इन सीधे सादे लोगों के विचित्र गाँवों को देखने के लिये योरुप और अमरीका के यात्री आया करते हैं।

ब्रिटनी का निवासी वीर स्वाभिमानी और स्वाधीन होता है। वह अपना ही खेत जोतता है या अपनी नाव लेकर मछली मारने जाता है। उसकी पथरीली भूमि ने उसे भी बड़ा कठोर और परम्परा प्रेमी बना दिया है। यहां आधुनिक समय की उन्नति बहुत कम देखने में आती है। ब्रिटेनी का निवासी बुरी दृष्टि और

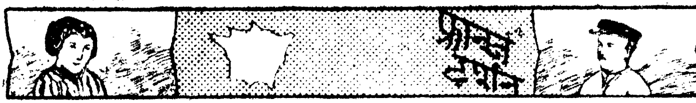


भूत पिशाच में भी विश्वास रखता है। वह समझता है कि उसके सन्त आश्चर्य कर्म कर सकते हैं। वह मार्ग में बनो हुई समाधि के सामने प्रार्थना करने के लिये ठहर जाता है। ब्रिटेनी में प्राचीन समय के गिरजे समाधियाँ और इसाई धर्म से पहले के स्मारक बहुत मिलते हैं। मेन्हीर और डोल्मीन स्मारक उस समय के हैं जब यहां के निवासी इसाई नहीं हुये थे। मेन्हीर बड़े बड़े पत्थर हैं। इनका एक सिरा पृथिवी में गड़ा हुआ है। कभी यह पत्थर पंक्ति और घेरे के आकार में होते हैं कभी अकेले ही गड़े मिलते हैं। यहीं पर फ्रांस के प्राचीन निवासी पूजा किया करते थे या मृतों को गाड़ते थे। ब्रिटेनी पश्चिमी भाग में कारनाक स्थान पर यह स्मारक विषेष रूप से अधिक हैं वैसे ये सभी भागों में फैले हुये हैं। ब्रिटनी के घर अलग अलग भारी भूरे पत्थरों के बने हुये हैं। जो पड़ोस में बहुतायत से मिलता है। कहीं कहीं यह घर सैकड़ों वर्ष के पुराने हैं। कुछ घरों में लकड़ो का बढ़िया काम है। गलियाँ तङ्ग हैं।

घरों की खिड़की बहुत छोटी होती है। इसलिये

घर के भीतर कुछ अँधेरा रहता है। घरों में लकड़ी की बनी हुई भारी मेज़, स्टूल और बेंचें रहती हैं। एक ओर कुछ लकड़ियां सुलगती रहती हैं। इनके ऊपर एक हांडी दिन भर टँगी रहती है। इसी में घर का भोजन पकता है। छत के नीचे मांस, चरबी, प्याज़ (रस्सी में गुंथा हुआ) और जड़ी बूटी आदि नई चीजें लटकती रहती हैं। एक ओर पलने में कपड़ों के ढेर पर बच्चा लेटा रहता है। छोटी लड़की मोटा ऊनी लहँगा झूला और मलमल का कालर, टोपी और लकड़ी के सेबाट पौलियां पहनती है। यह लकड़ी के जूते उसके पांव में एक दम ठीक बैठते हैं। इनके भीतर मुलायम चमड़ा और ऊन भरी रहती है। घर बुहारने झाड़ने और घर का दूसरा काम करने के बाद वह पहली टोपी के ऊपर एक दूसरी गोटा लगी टोपी पहन लेती है। त्योहार के दिन लड़कियाँ बरसों की रक्खी हुई सोना चाँदी के काम वाली गहरे नीले रँग की पोशाक पहनती हैं।

मनुष्य लम्बा चमकीला फीता लगी हुई फेल्ट की गोल टोपी पहनते हैं। उनकी जाकट में बहुत से बटन रहते हैं। उनके पुराने नीले पाजामे में अक्सर प्योंदे



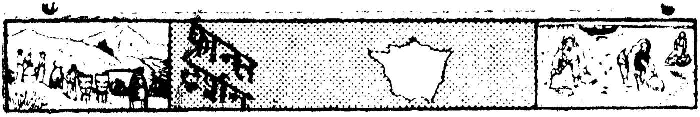
लगे होते हैं। ब्रिटनी के ब्रेटन लोग फ्रेंच भाषा बोल लेते हैं लेकिन घर पर वे ब्रेटन भाषा बोलते हैं। यही उनकी मातृभाषा है। खेत के काम से लौटने अथवा मछली मार लाने पर ब्रेटन लोग घर पर भूरी या काली रोटी, तरकारी और मछली खाते हैं और बहुत सा सीडर (सेव का रस) पीते हैं।

सेण्ट एनी का पार्डन (क्षमा) ब्रिटेनी में सबसे बड़ा त्योहार होता है। सेण्ट एनी आरे गाँव की ग्राम्य देवी (सेण्ट) है। अब से १२०० वर्ष पहले सेण्ट एनी ने एक किसान को दर्शन दिये थे। उसने किसान को खेत में एक स्थान पर खोदने के लिये कहा वहाँ सेण्ट की मूर्ति निकली। देवी ने अपनी स्मृति में एक छोटा गिरजा बनाने के लिये उसे आदेश दिया। पुराने हो जाने पर इसी स्थान पर एक एक करके कई नये गिरजे बने। इस समय वहाँ पर एक सुन्दर गिरजा है। यह त्योहार २५ जुलाई को होता है। सभी ब्रेटन लोग इस दिन यहां प्रार्थना करने आते हैं। कुछ लोग गाड़ियों पर आते हैं। बहुत से लोग सौ सौ मील पैदल चल कर यहां आते हैं। इनका विश्वास है कि यहां आकर

प्रार्थना करने से साल भर घर में समृद्धि रहती है। इस से यहां किसानों की बड़ी भीड़ हो जाती है। दोपहर के समय गिरजे के सामने वाले आँगन में प्रार्थना करने वालों की सटी हुई पंक्तियाँ नज़र आती हैं। वहाँ बहुत से दुकानदार और फेरी वाले भी आते हैं और सीटी कागज़ के बाजे आदि तरह तरह की चीज़ें बेचते हैं।

पेरिस

पेरिस नगर संसार के अत्यन्त सुन्दर नगरों में से एक है। इसके उद्यान, पार्क भवन आदि सभी सुन्दर हैं। पेरिस की चौड़ी सडकों के दोनों ओर मनोहर वृक्ष, और फूल हैं। सड़कों के किनारों पर ही बरामदेनुमा चौड़ी पगडंडियां हैं। इनको बुहार झाड़ कर बहुत ही साफ रक्खा जाता है। इसी के समीप बहुत से उपाहार-गृह (Cafe) हैं जहां लोग कुछ फ्रैंक खर्च करके चाय या कहवा पीते हैं। बसन्त ऋतु में पेरिस का दृश्य और मनोहर हो जाता है। पेड़ों की पत्तियाँ बहुत ही मुलायम



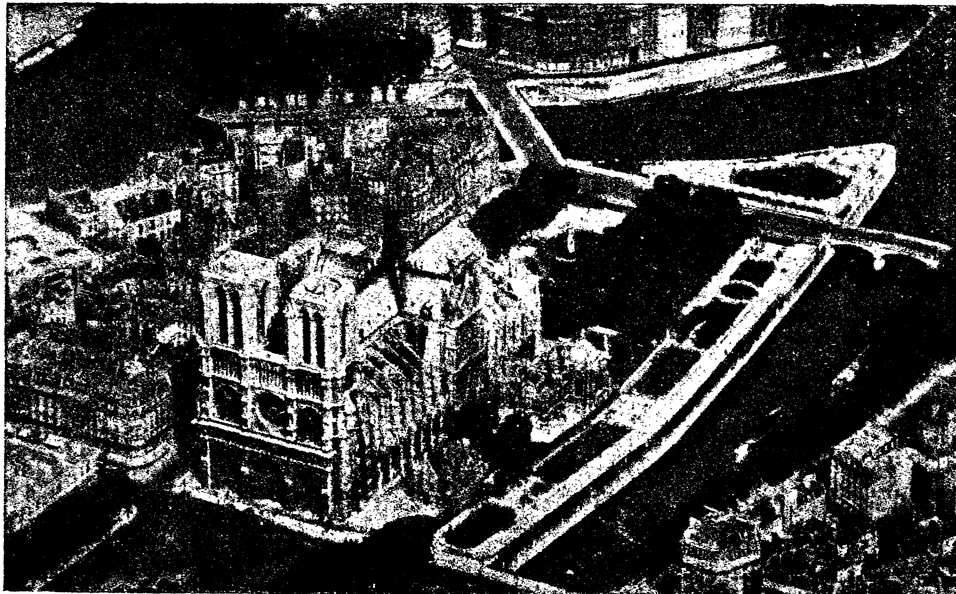
हरी निकल आती हैं और उनमें सुहावने फूल फूलने लगते हैं।

सेन नदी ने पेरिस शहर को दो भागों में बाँट दिया है। दाहिने किनारे पर शहर का वह भाग है जहां विजय स्तम्भ, महराबें, आलीशान इमारतें और पार्क हैं। दूर दूर के लोग इनको देख कर आनन्द उठाते हैं। बायें किनारे पर शहर का पुराना भाग है। यहां की सड़कें कुछ कम चौड़ी हैं। लेकिन यहीं सोरबोर्न विश्वविद्यालय और पेन्थियन है जहां प्रसिद्ध फ्रांसीसियों के स्मारक बने हुये हैं।

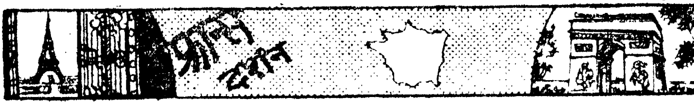
प्लेस डे ला कनकार्ड एक विशाल और आलीशान स्थान है। यहां सुन्दर फव्वारे और स्मारक हैं। एक ओर टूलेरीज़ के प्रसिद्ध बगीचे हैं। आर्क डी ट्रायफ है यहां एक विशाल महराब है जहां नेपोलियन की विजयों के स्मृति-चिन्ह बने हैं। यहां बोइस डी बोलोन है जहां पेरिस के लोग सैर करने के लिये आते हैं।

पेरिस के चिड़ियाघर और अजायबघर संसार में प्रसिद्ध हैं। इनकी संख्या भी अधिक है

एक पुराने पुल को पार करने पर पेरिस का



पेरिस का नाटरडम

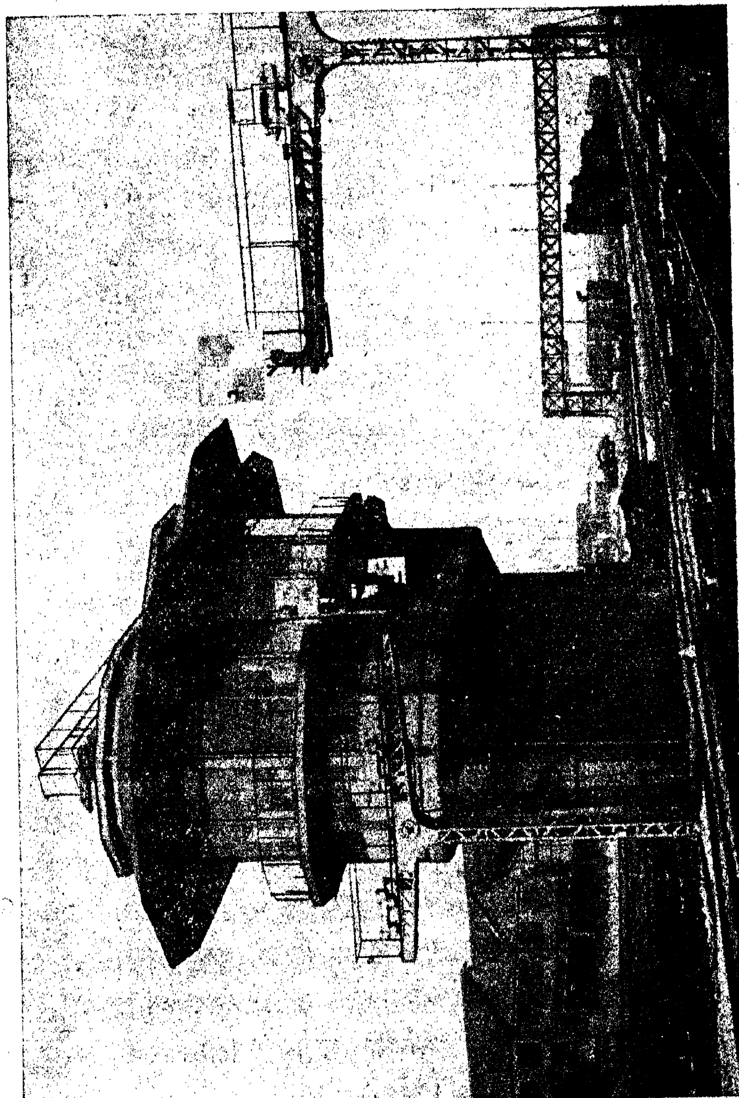


पुराना भाग मिलता है। यहां फ्रांस का जगत्प्रसिद्ध नाटरम गिरजा है। यह उस स्थान पर बना है जहां पहली शताब्दी में बृहस्पति का मन्दिर था। इस गिरजे का बनना ११६३ ई० में आरम्भ हुआ और अब से ६०० वर्ष पूर्व बन कर तयार हो गया।

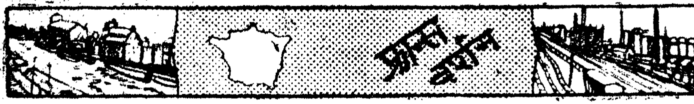
पेरिस के नाट्य घरों, गिरजा घरों, महलों और दूसरे दर्शनीय स्थानों को भलीभांति देखने में कई दिन लगते हैं।

योरुप के दूसरे कारबारी शहरों की तरह पेरिस में धुआं धूल का नाम नहीं है। फिर भी ट्रैम गाड़ियां और मोटर लारियां बराबर चलती रहती हैं। पेरिस में कई रेलवे स्टेशन हैं। गार सेंट लाज़ेर, रू सेंट लाज़ेर पेरिस के मध्य भाग में स्थित है। यहां से नार्मण्डी, रूआं, डियप हावर, चेरबर्ग, वर्साई आदि स्थानों को रेलगाड़ियां जाती हैं।

गारु डुनार्ड से रू डे डनकर्क, रूबै, बोलोन, केले, लिल, बेल्जियम और उत्तरी जर्मनी को रेलगाड़ियां छूटती हैं। गार डी एस्ट से रीम्स, नैन्सी, बेल्फर्ट जर्मनी और स्विज़रलैण्ड को गाड़ियां जाती हैं। गाड डि



पेरिस सेंट डेनिस (सिंगनल बाक्स) कैबिन

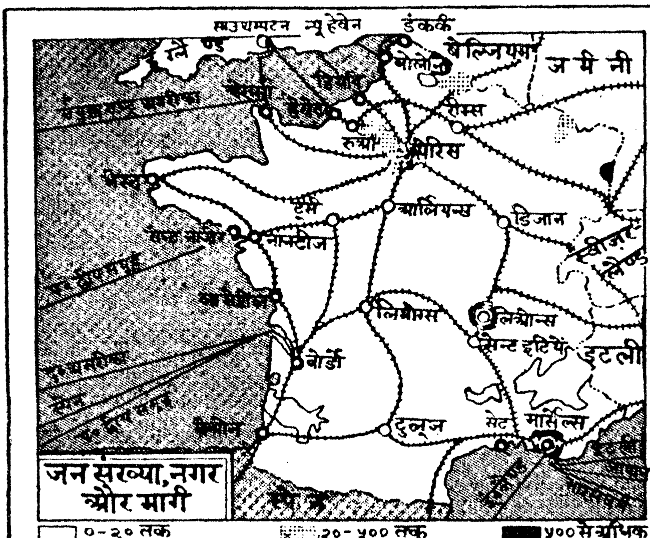


लिओन और गार डि ओर्लियन्स, विन्सेन्सेन्स, डू लक्सेमबर्ग स्टेशनों से इन्हीं स्थानों के लिये गाड़ियां छूटती हैं।

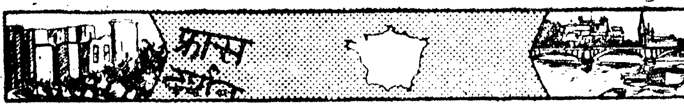
रोन के तट पर बसे हुये नगर

दक्षिणी फ्रांस की प्रधान नदी रोन है। जहां यह जेनेवा झील से अपना नीला जल लेकर सेवाय के ढालों से नीचे उतरती है और लिओन में पहुंचती है वहीं वेगवती सेओन नदी वोज़े पर्वत और बर्गण्डी से अपना मटीला पानी लाकर रोन में मिल जाती है। संगम के आगे भी कुछ दूर तक नीला और मटीला जल अलग अलग दिखाई देता है। संगम के पास लिओन नगर की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। यह फ्रांस भर में रेशम के कारबार का सब से बड़ा केन्द्र है। लिओन के आगे दक्षिण की ओर सब कहीं शहतूत के पेड़ मिलते हैं। इनकी पत्तियाँ खिलाकर फ्रांसीसी लोग असंख्य रेशम के कीड़े पालते हैं। रोन के निचले भाग में पहुँचने के पहले वियना नगर पड़ता है जहाँ रोमनकाल के भग्नावशेष हैं। आरेंज का छोटा नगर इतिहास में

बहुत प्रसिद्ध है। किसी समय यह एक छोटा स्वाधीन राज्य था। यहीं एक पुराने रोमन नाटक घर के खँडहर हैं। इसकी एक दीवार १११ फुट ऊँची ३३५ फुट लम्बी



और १३ फुट मोटी है। यह विशाल धुँधले पत्थरों की बनी है। आरेंज नगर से कुछ ही दूर एविग्नान है। यहां पोप लोगों (पादरियों) का विशाल महल है। १३०५ ई० में फ्रांस का एक विशप पोप (बड़ा पादरी)



चुना गया। उसने अपनी धर्म-राजधानी रोम में रखने के पदले एविग्नान में बनाई। १३७० के बाद यहां पोप का दरबार न लगा। लेकिन पोप का किलेनुमा महल इस समय भी यहाँ मौजूद है। यह एक ऊंचे टीले पर बना है। रोन नदी इसका चक्कर काट कर बहती है।

एविग्नान से नीचे की ओर बढ़ने पर आर्ल्स नगर मिलता है। यह रोन के डेल्टा के सिरे पर स्थित है। आर्ल्स के आगे रोन नदी कई धाराओं में बट कर बहती है। वहां भी रोमनकाल के खंडहर हैं। इसके विशाल अखाड़े में २०,००० दर्शक बैठ सकते थे रोन डेल्टा से कुछ दूर मार्सेल्स का बन्दरगाह है। पेरिस को छोड़कर फ्रांस का दूसरा बड़ा शहर मार्सेल्स ही है। यह बहुत पुराना व्यापारी नगर है। यहां बारी बारी से फोनिशियन, यूनानी, रोमन और अरबी व्यापारी व्यापार करने आये। अटलांटिक के व्यापार ने कुछ समय के लिये इसके व्यापार को कम कर दिया था। लेकिन स्वेज़ नहर के खुल जाने से नगर का व्यापार फिर बढ़ गया। पहले नगर का दृश्य उजाड़ था। लेकिन

जब से ड्यूरेन्स नदी की एक नहर यहां आ गई है तब से यह कुछ हरा भरा हो गया है। आजकल यहां सभी देशों के जहाज व्यापार करने आते हैं। शहर में जैतून का तेल और दूसरे तेल पेरने और साबुन बनाने के कई कारखाने हैं। अफ्रीका और पूर्व का समस्त व्यापार फ्रांस के इसी बन्दरगाह में होता है।

मार्सेल्स इटली की सीमा के बीच में तटीय अल्प्स की आड़ में फ्रांस का बड़ा सुन्दर किनारा है। इसे रिवेरा कहते हैं। यहां का सबसे बड़ा नगर नीस है। यह एक सुन्दर खाड़ी के सिरे पर पहाड़ियों की तलहटी में बसा है। किनारे पर ही होटलों और सुनहले घरों की पंक्ति है। शीतकाल में हजारों यात्री यहां सैर करने और यहां की धूप लेने आते हैं। नीस से दस मील पूर्व की ओर मोनाक नाम की सबसे छोटी रियासत है। इसकी लम्बाई तीन मील और चौड़ाई आध मील है।

तूलां (टूलान) मार्सेल्स के दक्षिण में भूमध्यसागर का प्रधान फ्रांसीसी जहाजी अड्डा है।

रुआं—पुराने ज़माने में जब नार्मण्डी एक प्रथम राज्य

था उस समय रुआं नार्मण्डी की राजधानी था। आधुनिक समय में रुआं एक बड़ा कारबारी नगर हो गया है। सेन नदी गहरी कर दी गई है। इससे स्टीमर (धुआंकश जहाज) रुआं तक आ सकते हैं। कोयले की खानें नगर से बहुत दूर नहीं हैं। यहां इतना सूती कपड़ा बुना जाता है कि रुआं फ्रान्स का मैंचेस्टर कहलाता है।

हाव्र सेन नदी के मुहाने पर अटलांटिक का सबसे बड़ा फ्रांसीसो बन्दरगाह है। यहां से नार्मण्डी का मक्खन, अंडा और पनीर बाहर भेजा जाता है और रुई आदि सामान अमरीका और इँगलैंड से आता है।

केईन एक छोटा बन्दरगाह और व्यापारिक नगर है।

चेर बर्ग किलेबन्द जहाजी अड्डा है। डियप, बोलोन, और केले तट के अन्तिम बन्दरगाह हैं। यहां से छोटे छोटे पैकेट इँगलैंड को जाते हैं।

डन्कर्क फ्रांस भर में तीसरे नम्बर का बन्दरगाह है। यह अपने पीछे के कारबारी प्रदेश के लिये रूस से फ्लैक्स (मलमल) दक्षिणी अमरीका से ऊन और संयुक्त राष्ट्र अमरीका से रुई मँगाता है।

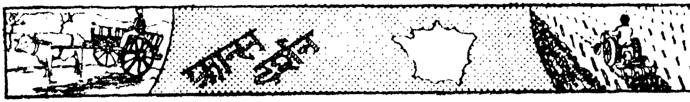
लित उत्तरी भाग का सबसे बड़ा शहर है। यहां रुई और मलमल के कपड़े बनते हैं। यहीं शक्कर, शराब, रसायनिक पदार्थ और इँजीनियरिंग का सामान बनता है।

रूबे में ऊन और मलमल के कपड़े बनते हैं। वेलेंसियो में प्रसिद्ध गोटा बनता है। टूरकोइँग कालीनों के लिये और केम्ब्राय मलमल के कपड़ों के लिये प्रसिद्ध है।

रीम्स में शेम्पेन ज़िले की शराब बनाई जाती है और एकत्रित की जाती है। यहां के प्रसिद्ध गिरजे में पहले फ्रांस के राजाओं को राज्याभिषेक होता था। पिछली बड़ी लड़ाई में यह गिरजा नष्ट हो गया।

अल्प्स प्रदेश के ग्रेनोबिल नगर में छोटे मेमनों (बकरी के बच्चों) की खाल के दस्ताने बनते हैं। सेट बन्दरगाह से शराब भेजी जाती है। यह बन्दरगाह एक नहर द्वारा मार्सेल्स से जुड़ा हुआ है।

बेसान्सन में घड़ियां बनती हैं। लेक्रोजो (२) लिओन के उत्तर में पहाड़ी प्रदेश में स्थित है। इसके पास ही कोयले और लोहे की खानें हैं। इसी से नगर में फौलाद के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहां इंजिन, रेल और बड़ी बड़ी तोपें बनती हैं।



सेंट इटियें लिओन के दक्षिण और ऐन घाटी के पश्चिम में दूसरा बड़ा कारबारी नगर है। यहां लोहे फौलाद और छोटे हथियारों के कारखाने हैं। इसे अक्सर फ्रांस का बर्मिंघम कहते हैं। यहाँ फीते और सूती कपड़े भी बनते हैं।

पश्चिमी तट पर ब्रिटेनी के सेण्ट मालो बन्दरगाह और इँगलैंड से व्यापार होता है। ब्रेस्ट एक जहाजी बन्दरगाह है।

टूर्स मध्यवर्ती फ्रांस में शराब बनाने के लिये प्रसिद्ध है।

नान्ते लवायर के मुहाने का बन्दरगाह है। सेण्ट नाजेर और आगे समुद्र के पास स्थित है।

बोर्डो गेरोन का प्रधान बन्दरगाह है और शराब के लिये प्रसिद्ध है। टूलूज़ ऊपरी गेरोन में एक व्यापारी नगर है।

बेयोन मज़बूत किलेबन्द स्थान है।

ब्यारिट्ज और पाऊ पिरेनीज के प्रदेश में स्वास्थ्य-वर्द्धक स्थान है।
